हिन्दी व्याकरण

वर्ण :– वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े न हो सके वर्ण कहलाती है।

- शब्द निर्माण की लघुतम ईकाई ध्वनि या वर्ण है।

वर्ण के भेद :–

1. स्वर
2. व्यंजन

- हिन्दी वणमाला में 11 स्वर और 33 व्यंजन है।
- **स्वर** :– वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में वायु बिना किसी अवरोध के बाहर निकलती है, स्वर कहलाते है।
- **स्वरों के भेद** :–

उच्चारण समय या मात्रा के आधार पर स्वरो के तीन भेद है।

1. **ह्रस्व स्वर** :– इन्हे मूल स्वर तथा एकमात्रिक स्वर भी कहते है। इनके उच्चारण में सबसे कम समय लगता है।
   जैसे – अ, इ, उ, ऋ
2. **दीर्घ स्वर** :– इनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा दुगुना समय लगता है अर्थात दो मात्राए लगती है, उसे दीर्घ स्वर कहते है।
   जैसे – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
3. **प्लुत स्वर** :– संस्कृत में प्लुत को एक तीसरा भेद माना जाता है, पर हिन्दी में इसका प्रयोग नहीं होता जैसे ओउम्

प्रयत्न के आधार पर:– जीभ के प्रयत्न के आधार पर तीन भेद है।

1. **अग्र स्वर** :– जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अगला भाग ऊपर नीचे उठता है, अग्र स्वर कहते है
   जैसे – इ, ई, ए, ऐ
2. **पश्च स्वर** :– जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का पिछला भाग सामान्य स्थिति से उठता है, पश्च स्वर कहे जाते है
   जैसे – ओ, उ, ऊ, ओ, औ तथा ऑ
3. **मध्य स्वर** :– हिन्दी में 'अ' स्वर केन्द्रीय स्वर है। इसके उच्चारण में जीभ का मध्य भाग थोड़ा–सा ऊपर उठता है।

मुखाकृति के आधार पर :–

1. **संवृत** :– वे स्वर जिनके उच्चारण में मुँह बहुत कम खुलता है।
   जैसे – इ, ई, उ, ऊ
2. **अर्द्ध संवृत** :– वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख संवृत की अपेक्षा कुछ अधिक खुलता है
   जैसे – ए, ओ
3. **विवृत** :– जिन स्वरों के उच्चारण में मुख पूरा खुलता है।
   जैसे – आ
4. **अर्द्ध विवृत** :– जिन स्वरों के उच्चारण में मुख आधा खुलता है।
   जैसे – अ, ऐ, औ।

- **ओष्ठाकृति के आधार पर :–**
  1. **वृताकार :–** जिनके उच्चारण में होठो की आकृति वृत के समान बनती है।
     जैसे – उ, ऊ, ओ, औ
  2. **अवृताकार :–** इनके उच्चारण में होठो की आकृति अवृताकार होती है।
     जैसे – इ, ई, ए, ऐ
  3. **उदासीन :–** 'अ' स्वर के उच्चारण में होठ उदासीन रहते है।
- 'ऑ' स्वर अग्रेजी से हिन्दी में आया है।

व्यंजन

- जो वर्ण स्वरों की सहायता से बोले जाते है। व्यंजन कहलाते है।
- **प्रयत्न के आधार पर व्यंजन के भेद :–**
  1. **स्पर्श :–** जिनके उच्चारण में मुख के दो भिन्न अंग – दोनों ओष्ठ, नीचे का ओष्ठ और ऊपर के दांत, जीभ की नोक और दांत आदि एक दूसरे से स्पर्श की स्थिति में हो, वायु उनके स्पर्श करती हुई बाहर आती हो।
     जैसे :– क्, च्, ट्, त्, प्, वर्गो की प्रथम चार ध्वनियाँ
  2. **संघर्षी :–** जिनके उच्चारण में मुख के दो अवयव एक – दूसरे के निकट आ जाते है और वायु निकलने का मार्ग संकरा हो जाता है तो वायु घर्षण करके निकलती है, उन्हें संघर्षी व्यंजन कहते है।
     जैसे ख़्, ग़्, ज़्, फ़्, श्, ष्, स्
  3. **स्पर्श संघर्षी :–** जिन व्यंजनों के उच्चारण में पहले स्पर्श फिर घर्षण की स्थिति हो।
     जैसे – च्, छ्, ज्, झ्
  4. **नासिक्य :–** जिन व्यंजनों के उच्चारण में दात, ओष्ठ, जीभ आदि के स्पर्श के साथ वायु नासिका मार्ग से बाहर आती है।
     जैसे – ङ्, न्, म्, ञ्, ण
  5. **पार्श्विक :–** जिन व्यंजनो के उच्चारण में मुख के मध्य दो अंगो के मिलने से वायु मार्ग अवरूद्ध होने के बाद होता है।
     जैसे ल्
  6. **लुण्ठित :–** जिनके उच्चारण में जीभ बेलन की भाँति लपेट खाती है।
     जैसे – र्
  7. **उत्क्षिप्त :–** जिनके उच्चरण में जीभ की नोक झटके से तालु को छूकर वापस आ जाती है, उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते है।
     जैसे – ड़्, ढ़्
  8. **अर्द्ध स्वर :–** जिन वर्णों का उच्चारण अवरोध के आधार पर स्वर व व्यंजन के बीच का है।
     जैसे – य्, व्
- **उच्चारण स्थान के आधार पर व्यंजन के भेद :–**
  1. **स्वर – यन्त्रमुखी :–** जिन व्यंजनों का उच्चारण स्वर – यन्त्रमुख से हो।
     जैसे – ह्, स
  2. **जिह्वामूलीय :–** जिनका उच्चारण जीभ के मूल भाग से होता है।
     जैसे – क्, ख्, ग्

3. **कण्ठय** :– जिन व्यंजनो के उच्चारण कण्ठ से होता है, इनके उच्चारण में जीभ का पश्च भाग कोमल तालु को स्पर्श करता है।
   जैसे 'क' वर्ग
4. **तालव्य** :– जिनका उच्चारण जीभ की नोक या अग्रभाग के द्वारा कठोर तालु के स्पर्श से होता है।
   जैसे – 'क' वर्ग, य् और श्
5. **मूर्धन्य** :– जिन व्यंजनों का उच्चारण मूर्धा से होता है। इस प्रक्रिया में जीभ मूर्धा का स्पर्श करती है।
   जैसे – 'ट' वर्ग, ष्
6. **वर्त्सय** :– जिन ध्वनियों का उद्भव जीभ के द्वारा वर्त्स या ऊपरी मसूढ़े के स्पर्श से हो ।
   जैसे – न्, र्, ल्
7. **दन्त्य** :– जिन व्यंजनों का उच्चारण दाँत की सहायता से होता है। इसमें जीभ की नोक उपरी दंत पंक्ति का स्पर्श करती है।
   जैसे – 'त' वर्ग, स्
8. **दंतोष्ठ्य** :– इन ध्वनियों के उच्चारण के समय जीभ दाँतो को लगती है तथा होंठ भी कुछ मुड़ते है।
   जैसे – व्, फ्
9. **ओष्ठ्य** :– ओष्ठ्य व्यंजनो के उच्चारण में दोनो होंठ परस्पर स्पर्श करते हैं तथा जिह्म निष्क्रिय रहती है
   जैसे – 'प' वर्ग

➧ **स्वर तंत्रियों में उत्पन्न कम्पन के आधार पर** :–

1. **घोष** :– जिन ध्वनियों के उच्चारण के समय में स्वर–तन्त्रियाँ एक–दूसरे के निकट होती है और निःश्वास वायु निकलने में उसमें कम्पन हो । प्रत्येक वर्ग की अन्तिम तीन ध्वनियाँ घोष होती है।
2. **अघोष** :– जिनके उच्चारण–समय स्वर–तंत्रियों में कम्पन न हो। प्रत्येक वर्ग की प्रथम दो ध्वनियाँ अघोष होती है।

➧ **श्वास (प्राण) की मात्रा के आधार पर** :–

1. **अल्पप्राण** :– जिनके उच्चारण में सीमित वायु निकलती है, उन्हें अल्प्राण व्यंजन कहते है ऐसी ध्वनियाँ 'ह' रहित होती है। प्रत्येक वर्ग की पहली, तीसरी, पांचवी ध्वनियाँ अल्पप्राण होती है।
2. **महाप्राण** :– जिनके उच्चारण में अपेक्षाकृत अधिक वायु निकलती है। ऐसी ध्वनि 'ह' युक्त होती है। प्रत्येक वर्ग की दूसरी और पाँचवी ध्वनि महाप्राण होती है।

➢ **संयुक्त व्यंजन**:– जब दो अलग–2 व्यंजन संयुक्त होने पर अपना रूप बदल लेते है तब वे संयुक्त व्यंजन कहलाते है। जैसे –

क्ष = क् + ष् + अ
त्र = त् + र् + अ
ज्ञ = ज् + ञ् + अ
श्र = श् + र् + अ

➢ **अयोगवाह** :– जिन वर्णो का उच्चारण व्यंजनो के उच्चारण की तरह स्वर की सहायता से होता है, परंतु इनके उच्चारण से पूर्व स्वर आता है, अतः स्वर व व्यंजनो के मध्य की स्थिति के कारण ही इनको अयोगवाह कहा जाता है।
जैसे – अं, अः

➧ **अं (ं)** :– इसमें अनुस्वार का बिन्दु 'अ' अक्षर का सहारा लिए हुए है।

➧ **अः (विसर्ग)** :– दोनो बिन्दु (:) 'अ' अक्षर का सहारा लिए हुए है।

- **अनुस्वार** :– इनका उच्चारण करते समय वायु केवल नाक से निकलती है।
  जैसे – रंक, पंक
- **अनुनासिक** :– इनका उच्चारण मुख और नासिका दोनों से मिलकर निकलता है।
  जैसे – हँसना, पाँच

शब्द

- एक या अधिक वर्णो के मेल से बनी सार्थक ध्वनि को शब्द कहा जाता है।
- **शब्द के प्रकार:–**

स्त्रोत या इतिहास के आधार पर

1. **तत्सम:**– जो शब्द संस्कृत से हिन्दी में ज्यो के त्यों अर्थात बिना परिवर्तन के ले लिए गए है
   जैसे अग्नि, पृथ्वी, रात्रि
2. **तद्भव:**– तत्सम (संस्कृत) के वे शब्द है जो कुछ बिगड़ कर हिन्दी में प्रचलित हो गए है
   जैसे :– हस्त से 'हाथ', कर्ण से 'कान'
3. **देशी:**– जो शब्द स्थानीय भाषाओं में से हिन्दी में प्रयुक्त होते है जैसे रोड़ा, बैंगन, सेब
4. **संकर:**– दो भाषाओं के मेल से बने शब्द संकर कहलाते है जैसे

खून + पसीना	बे + डौल	फारसी + हिन्दी
जेल + खाना	टिकट + घर	अग्रेंजी + हिन्दी

5. **विदेशी:**– वे शब्द जो विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आए है।
   - **अरबी के शब्द:**– अखबार, आदत, आखिर, अमीर, ईनाम, ईमान, उम्र, औरत, कसूर, कसरत, कानून, किताब, खबर, खराब, जनाब, जलिम, तहसील, तकदीर, तबादला, नशा, फायदा, मुल्ला, मजहब, मतलब, हकीम, शराब
   - **फारसी के शब्द:**– अदा, अगर, आमदनी, आईना, आवाज, आसमान, कमीना, कारीगर, किशमिश, खुश, गवाह, चादर, चश्मा, चेहरा, जिगर, जोश, दफ्तर, दवा, दीवार, दिलेर, दलाल, पाजामा, परहेज, बेकार, बेरहम, मजदूर, सरदार, सौदागर, साहब
   - **तुर्की के शब्द:**– तोप, तमाशा, कैंची, खंजर, चेचक, चम्मच, बेगम, बारुद, बहादुर, मुगल, दरोगा, सराय, बीबी, लाश, उर्दू
   - **अंग्रेजी के शब्द:**– अफसर, अपील, कमेटी, कलक्टर, गिलास, अस्पताल, गैस, टिकट, कुली, लालटेन, पुलिस, रजिस्टर
   - **फ्रेंच के शब्द:**– लैम्प, मेयर, आलपिन, सूप, पिकनिक, कारतूस, कूपन, मीनू, अंग्रेज
   - **जापानी के शब्द:**– रिक्शा
   - **चीनी के शब्द:**– चाय, लीची, चीनी
   - **पुर्तगाली** :– अलमारी, इस्तरी, इस्पात, कनस्तर, कप्तान, गोदाम, नीलम, पादरी, फीता, गमला, संतरा, चाबी, तौलिया, बाल्टी, साबुन

व्युत्पति (रचना या बनावट) के आधार पर शब्द के भेद

1. **रुढ़** :– जो अन्य शब्दो के योग से न बने हों
   जैसे – कमल, घोड़ा, जल
2. **यौगिक** :– जो दो शब्दो मे योग से बनते है
   जैसे – पाठशाला = पाठ+शाला, विद्यालय = विद्या+आलय
3. **योगरुढ़** :– जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बने हों तथा किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हों उन्हे योगरुढ़ शब्द कहते है। जैसे– दशानन, लम्बोदर

➧ प्रयोग के अनुसार शब्द के भेद

विकारी	अविकारी
1. संज्ञा	5. क्रिया विशेषण
2. सर्वनाम	6. सम्बन्ध बोधक
3. विशेषण	7. समुच्चय बोधक
4. क्रिया	8. विस्मयादि बोधक

- **विकारी शब्दः–** इन शब्दों के रुप लिंग, वचन, कारक, काल के कारण बदल जाते है।
  जैसे लड़का, लडकी, मेरा, मेरी
- **अविकारी शब्दः–** लिंग, वचन, कारक, तथा काल के कारण जिन शब्दो के रुप नहीं बदलते वे अविकारी शब्द कहलाते है।
  जैसे शनैः शनैः, और, किन्तु, हे, अरे

तत्सम	तद्‌भव	तत्सम	तद्‌भव	तत्सम	तद्‌भव
अस्थि	हड्डी	कर्ण	कान	कृपा	किरपा
अंधकार	अंधेरा	काक	कौआ	ग्रन्थि	गाँठ
आम्र	आम	कोकिल	कोयल	चन्द्र	चाँद
अँगुली	उँगली	घृत	घी	जीर्ण	झीना
अश्रु	आँसू	गणना	गिनती	दशम	दसवाँ
उष्ट्र	ऊँट	चटका	चिड़िया	दंड	डंडा
कार्य	काज	पक्षी	पंछी	महिषी	भैसं
क्षेत्र	खेत	पिपासा	प्यास	यमुना	जमना
ग्राम	गाँव	बाहु	बाँह	राज्ञी	रानी
चैत्र	चैत	भगिनी	बहन	लोहकार	लोहार
धूम्र	धुआँ	मुख	मुँह	श्वसुर	ससुर
नासिका	नाक	श्वास	साँस	सूत्र	सूत
पत्र	पत्ता	श्रृंग	सींग	हास	हँसी
भक्त	भगत	सूर्य	सूरज	अंध	अंधा
मृत्यु	मौत	अक्षि	आँख	कपोत	कबूतर
मक्षिका	मक्खी	कपाट	किवाड़	कृष्ण	किशन
स्वप्न	सपना	गृह	घर	काष्ठ	काठ
उज्ज्वल	उजाला	गर्दभ	गधा	कोष्ठ	कोठा
ओष्ठ	होंठ	जिहवा	जीभ	गृत	गड्ढ़ा
क्षीर	खीर	दधि	दही		
ग्राहक	गाहक	पुत्र	पूत		
ज्येष्ठ	जेठ	भिक्षा	भीख		
दंत	दाँत	मस्तक	माथा		
दुग्ध	दूध	लज्जा	लाज		
धैर्य	धीरज	हस्त	हाथ		
निंद्रा	नींद	अम्बा	अम्मा		
मित्र	मीत	अटट्‌ालिका	अटारी		

मौक्तिक	मोती	अग्र	आगे		
शुष्क	सूखा	अर्ध	आधा		
सर्प	सांप	अद्य	आज		
हस्ती	हाथी	एकत्र	इकट्ठा		
अग्नि	आग	कज्जल	काजल		

संज्ञा

- किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, जाति या भाव के नाम को संज्ञा कहते है। जैसे श्रीराम, करनाल, वन, फल, ज्ञान
- **संज्ञा के भेदः–**
  1. **व्यक्तिवाचकः–** जिस संज्ञा से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान, का बोध हो जैसे सीता, रोहतक, रामायण, गंगा, यमुना
  2. **जातिवाचकः–** जिस संज्ञा से किसी जाति या वर्ग विशेष का बोध हो जैसेः– पुरुष, छात्र, नारी, गौ, बाह्मण, वृक्ष, नदी, राजा, पशु, मित्र
  3. **भाववाचक** :– जिस संज्ञा से पदार्थ या व्यक्ति के गुण–दोष, व्यापार, दशा आदि के भाव का बोध हो जैसे – बचपन, बढ़ापा, मिठास, बुराई, प्रसन्नता, घबराहट, लम्बाई, भलाई
  4. **समुदायवाचक** :– जिस संज्ञा शब्द से समुदाय का बोध हो जैसे कक्षा, सेना, भीड़, सभा
  5. **द्रव्यवाचक** :– जिस संज्ञा शब्द से द्रव्य या धातु का बोध हो जैसे– घी, तेल, हल्दी, लोहा।

- **भाववाचक संज्ञा बनाना**

जातिवाचक	भाववाचक	विशेषण	भाववाचक	क्रिया	भाववाचक
आदमी	आदमीयत	उचित	औचित्य	गिरना	गिरावट
ईश्वर	ऐश्वर्य	तपस्वी	तप / तपस्या	चलना	चाल / चलन
गुरू	गुरूत्व	महा	महिमा / महानता	दौड़ना	दौड़
चिकित्सक	चिकित्सा	सुन्दर	सौंदर्य / सुंदरता	पूजना	पूजा
भ्रातृ	भ्रातृत्व	जालिम	जुल्म	पढ़ना	पढ़ाई
युवक	यौवन	भूखा	भूख	बोलना	बोल
वत्स	वात्सल्य	सफेद	सफेदी	हँसना	हँसी
संस्कृति	संस्कार	आलसी	आलस्य	अहम्	अंहकार
कुमार	कौमार्य	प्यासा	प्यास		
घर	घरेलू	विधवा	वैधव्य		
ठग	ठगी				
देव	देवत्व				
बच्चा	बचपन				
मर्द	मर्दानगी				
नर	नरत्व				
बाप	बपौती				
शिशु	शैशव				

- **संज्ञा के विकार** – लिंग, वचन, कारक
- **लिंग** :– संज्ञा के जिस रुप से स्त्री या पुरुष जाति का बोध हो उसे लिंग कहते है लिंग के दो भेद है
  1. **पुल्लिंगः–** संज्ञा के जिस रुप से पुरुष जाति का बोध हो, उसे पुल्लिंग कहते है। जैसे नाखून, कान, झुमका, तन, घी, पपीता, जल, तिल, दिन, दीपक, संघ, दल, शरीर, दही, मोती।

2. स्त्रीलिंग :– संज्ञा के जिस रुप से स्त्री जाति का बोध हो उसे स्त्रीलिंग कहते है जैसे मृत्यु, पूर्णिमा, दया, माया, काया, मित्रता, खटास, शत्रुता, सभा, टोली, पंचायत, जड़, सरकार, फौज, पल्टन, भीड़, नाक, आँख

➢ लिंग परिवर्तन और उसके नियम

1. आ लगाने से
   आचार्य आचार्या
   महोदय महोदया
   सुत सुता
2. ई लगाने से
   पोता पोती
   ब्राह्मण ब्राह्मणी
3. इया लगाने से
   गुड्डा गुड़िया
   लोटा लुटिया
4. इका लगाने से
   नायक नायिका
   अध्यापक अध्यापिका
5. इन लगाने से
   नाई नाइन
   नाग नागिन
6. आइन लगाने से
   बनिया बनियाइन
   पण्ड़ित पण्ड़िताइन
7. नी लगाने से
   जाट जाटनी
   शेर शेरनी
8. आनी लगाने से
   भव भवानी
   हिन्दू हिन्दूआनी
9. इनी लगाने से
   ब्रह्मचारी ब्रह्मचारिणी
   अभिमानी अभिमानिनी
10. मती, वती लगाने से
   श्रीमान् श्रीमती
   भगवान भगवती
11. त्री लगाने से
   दाता दात्री
   रचयिता रचयित्री
   नेता नेत्री
   विद्वान विदुषी
   सम्राट साम्राज्ञी
   देवता देवी
   कवि कवयित्री

वीर वीरांगना
नपुंसक बाँझ

- **उभयलिंग**:– कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका प्रयोग दोनो लिंगो में हो सकता है। इन शब्दो में लिंग परिवर्तन नहीं होता जैसे– प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति, मैनेजर, इंजीनियर।
- पर्वतों, समयों, हिन्दी महीनो दिनों देंशों, जल–स्थल, विभागो, ग्रहों, नक्षत्रो, मोटी, भद्दी, भारी वस्तुओं के नाम पुल्लिंग है।

वचन

- शब्द के जिस रुप से किसी वस्तु के एक अथवा अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। हिन्दी में इसके दो भेद हैं।
  1. **एकवचन** :– शब्द के जिस रुप में केवल एक व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं जैसे लड़का, पुस्तक, कलम
  2. **बहुवचन** :– शब्द के जिस रुप से एक से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं जैसे– लड़के, पुस्तके, कलमें

एकवचन	बहुवचन
पाठक	पाठकगण
आप	आपलोग
सज्जन	सज्जनवृन्द
गुरु	गुरुजन
मित्र	मित्रवर्ग
स्त्री	स्त्रीजाति
सेना	सेनादल
विधार्थी	विधार्थीगण
गरीब	गरीब लोग
पण्ड़ित	पण्ड़ितवृन्द
आर्य	आर्यजन
मजदूर	मजदूरवर्ग
वीर	वीरदल
मुनि	मुनिजन

कारक

- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से उसका सम्बन्ध वाक्य की क्रिया या किसी अन्य शब्द के साथ जाना जाए, उसे कारक कहते हैं।

कारक	विभक्ति चिन्ह
कर्ता	ने
कर्म	को
करण	से, के द्वारा, के साथ
सम्प्रदाय	को, के लिए, वास्ते
अपादान	से (पृथकत्व बोधक)
सम्बन्ध	का, के, की
अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	हे, अरे, रे

- **कर्ता** :– संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से क्रिया के करने वाले का बोध होता है उसे कर्ता कारक कहा जाता है।
  जैसे – **मोहन** पुस्तक पढ़ता है।
- **कर्म** :– संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है उसे कर्म कारक कहते हैं। जैसे– श्याम **पाठशाला** जाता है।
- **करण** :–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से कर्ता के काम करने के साधन का बोध हो उसे करण कारक कहा जाता है।
  जैसे – राम ने **बाण** से बालि को मारा
- **सम्प्रदान** :– संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप के लिए क्रिया की जाए उसे सम्प्रदान कारक कहा जाता है
  जैसे – अध्यापक **विधार्थियों** के लिए पुस्तकें लाया।
- **अपादान** :– संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से पृथकता आरम्भ, भिन्नता आदि का बोध होता है उसे अपादान कारक कहा जाता है
  जैसे – गंगा **हिमालय** से निकलती है।
- **सम्बन्ध** :– संज्ञा या सर्वनाम का जो रुप एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ सम्बन्ध प्रकट करे उसे सम्बन्ध कारक कहते है।
  जैसे – यह **मोहन** का घर है
- **अधिकरण** :– संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से क्रिया के आधार का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं।
  जैसे– वीर सैनिक **युद्ध भूमि** में मारा गया।
- **सम्बोधन** :– संज्ञा का जो रुप चेतावनी या किसी को पुकारने का सूचक हो।
  जैसे – हे ईश्वर ! हमारी रक्षा करो

सर्वनाम

- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले विकारी शब्दों को सर्वनाम कहते हैं जैसे– यह, वह, उसके आदि।
- **सर्वनाम के छः भेद हैः–**
  1. **पुरूषवाचक सर्वनाम** :– जो सर्वनाम बोलने वाले, सुनने वाले या किसी अन्य व्यक्ति के लिए आए, उसे पुरूषवाचक सर्वनाम कहते हैं इसके तीन भेद हैं :–
     i. **अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम** :– वह, यह, उसका, कोई आदि।
     ii. **मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम** :– तुम, आप, तुम्हें आदि।
     iii. **उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम** :– मै, हम, हमारा आदि।

  2. **निश्चयवाचक सर्वनाम** :– जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु व्यक्ति की ओर संकेत किया जात है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं जैसे – यह, वह,।
     वह वहाँ खेल रहा है।
  3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** :– जिस सर्वनाम से किसी वस्तु या व्यक्ति का निश्चित बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं जैसे कोई, कुछ।
     a) कोई गा रहा है।
     b) कमरे में कुछ पड़ा है।
  4. **सम्बन्धवाचक सर्वनाम** :– जिन सर्वनामों द्वारा वाक्यों में आपसी सम्बन्ध प्रकट होता है वे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं जैसे –
     a) जो करेगा से भरेगा।
     b) जिसकी लाठी उसकी भैंस।

  ➧ इन वाक्यों में जो, सो, जिसकी, उसकी आदि सम्बन्ध को प्रकट करने वाले हैं अतः ये सभी सम्बन्धवाचक सर्वनाम है।
  5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** :– जिन सर्वनाम शब्दों में कोई प्रश्न किया जाए वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – विद्यालय में कौन जा रहा है ?

यह कलम किसकी है ?

➨ इन वाक्यों में 'कौन' तथा 'किसकी' कहकर 'व्यक्ति' तथा 'कलम' के बारे में प्रश्न किए गए हैं अतः ये प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं

6. **निजवाचक सर्वनाम** :– जिस सर्वनाम का प्रयोग वाक्य के कर्ता के लिए किया जाता है, वह निजवाचक सर्वनाम कहलाता है जैसे –
   a) वह अपना काम अपने आप करती है।
   b) अपने – 2 प्रश्न हल करो।
   c) यह अपना ही घर है।

➨ यहां अपना, अपने आप, अपने – अपने आदि शब्द स्वयं कर्ता के लिए प्रयुक्त हुए हैं अतः इन्हे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

विशेषण

➢ जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, संख्या, मात्रा या परिमाण आदि) बताते हैं विशेषण कहलाते हैं

➢ **विशेषण के चार भेद हैं।**

1. **गुणवाचक** :– जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। ये विशेषण भाव, रंग, दशा, आकार, समय, स्थान, काल आदि से सम्बन्धित होते है।
   जैसे– अच्छा, बुरा, सफेद, काला, रोगी, मोटा, पतला, लम्बा, चौड़ा, नया, पुराना, ऊँचा, मीठा, चीनी, नीचा, प्रातःकालीन आदि।
2. **परिमाणवाचक** :– जिन विशेषण शब्दों से किसी वस्तु के परिमाण, मात्रा, माप या तोल का बोध हो वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते है इसके दो भेद हैं।
   i. **निश्चित परिमाणवाचक** :– दस क्विंटल, तीन किलो, डेढ़ मीटर।
   ii. **अनिश्चित परिमाणवाचक** :– थोड़ा, इतना, कुछ, ज्यादा, बहुत, अधिक, कम, तनिक, थोड़ा, इतना, जितना, ढेर सारा।

3. **संख्यावाचक** :– जिन विशेषण शब्दों से संख्या का बोध हो वे संख्यावाचक विशेषण होते है इसके दो भेद हैं
   i. **निश्चित संख्यावाचक** :– दो, तीन, ढाई, पहला, दूसरा, इकहरा, दुहरा, तीनो, चारों, दर्जन, जोड़ा, प्रत्येक।
   ii. **अनिश्चित संख्यावाचक** :– कई, कुछ, काफी, बहुत।

4. **सार्वनामिक** :– जो सर्वनाम शब्द संज्ञा के पहले आकर विशेषण का काम करते हैं, उन्हे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं जैसे यह विद्यालय, वह बालक, वह खिलाड़ी आदि।

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
अर्थ	आर्थिक	उपासना	उपासक
ओज	ओजस्वी	काया	कायिक
जीव	जैविक	देह	दैहिक
नीति	नैतिक	घाव	घायल
खेल	खिलाड़ी	तीन	तीसरा
पठन	पठित	पुरा	पुरातन
पेट	पेटू	बाजार	बाजारू
आदि	आदिम	आविष्कार	आविष्कृत
ऋण	ऋणी	क्रम	क्रमिक
कागज	कागजी	काम	कामुक
क्षय	क्षीण	मुख	मुखर

मिठास	मीठा	यदु	यादव
रोज	रोजाना	लालिमा	लाली
लिपि	लिपिबद्ध	वेद	वैदिक
संयोग	संयुक्त	लखनऊ	लखनवी
लेख	लिखित	वन	वन्य
सेवा	सेवक	हृदय	हार्दिक
मौन	मौनी	विधि	वैध
सोना	सुनहरा	समय	सामयिक
बाधा	बाधित	भेद	भिन्न
रस	रसिक / रसीला		

सर्वनाम	विशेषण
यह	ऐसा
जो	जैसा
मै	मुझसा
कौन	कैसा
वह	वैसा

क्रिया

- जिस शब्द के द्वारा किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है उसे क्रिया कहते हैं।
- **कर्म के अनुसार क्रिया के दो भेद हैं–**
  1. **सकर्मक क्रिया** :– जहां पर क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर पड़े उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं जैसे – वह पुस्तक पढ़ता हैं।
  - यहाँ पढ़ने का फल पुस्तक पर पड़ रहा है। जैसे – खाना देना, पीना, देखना, काटना, करना, धोना, लिखना, बोलना
  2. **अकर्मक क्रिया** :– जहाँ पर क्रिया के व्यापार का फल कर्ता पर पड़े, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे –
     a) मुकेश सोता हैं,
     b) सीता रोती है।
  - यहां सोने, रोने का फल सीधा कर्ता पर पड़ता है । इन वाक्यों में क्रम नहीं होता जैसे – सोना, चलना, रोना, उठना, खुलना, जाना, हँसना

- **रचना की दृष्टि से क्रिया के भेद** :–
  1. **सामान्य क्रिया** :– जहां केवल एक क्रिया का प्रयोग किया जाए, वह सामान्य क्रिया कहलाती है जैसे – अनिल आया, मैने पढ़ा
  2. **संयुक्त क्रिया** :– दो या दो से अधिक धातुओं से मिलकर बनने वाली क्रियाएं, संयुक्त क्रियाएं कहलाती हैं। जैसे– लिखना चाहता है, पढ़ सकता है।
  3. **नामधातु क्रिया** :– संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों से बने क्रिया पदों का नामधातु क्रिया कहते हैं जैसे– हथियाना, बतियाना, लतियाना आदि।
  4. **प्रेरणार्थक क्रिया** :– जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को कार्य करने की प्रेरणा देता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं जैसे – वह राम से पत्र पढ़वाता है।
  5. **पूर्वकालिक क्रिया** :– जब कोई क्रिया मुख्य क्रिया से पूर्व ही समाप्त हो जाए तो उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं जैसे – सीता खाना खाकर स्कूल जाएगी।

प्रेरणार्थक क्रियाएं

सामान्य क्रिया	पहली प्रेरणार्थक	दूसरी प्रेरणार्थक
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना
गिरना	गिराना	गिरवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
धोना	धुलाना	धुलवाना

अविकारी शब्द (अव्यय)

➢ जो शब्द लिंग, वचन, कारक, पुरूष और काल के कारण नहीं बदलते, वे अव्यय कहलाते हैं ये चार प्रकार के होते हैं।
1. क्रिया विशेषण
2. सम्बन्ध बोधक
3. समुच्चय बोधक
4. विस्मयादि बोधक

1. **क्रिया विशेषण** :– वे शब्द जो क्रिया की विशेषता प्रकट करें, उन्हें क्रिया–विशेषण कहते हैं इसके चार भेद हैं
   i. **कालवाचक** :– जिससे क्रिया के करने या होने के समय (काल) का ज्ञान हो, वह कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाता है जैसे – परसों मंगलवार हैं, आपको अभी जाना चाहिए, आजकल, कभी, प्रतिदिन, रोज, सुबह, अक्सर, रात को, चार बजे, हर साल आदि।
   ii. **स्थान वाचक** :– जिससे क्रिया के होने या करने के स्थान का बोध हो, वह स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहलाता है। जैसे– यहाँ, वहाँ, इधर, उधर, नीचे, ऊपर, बाहर, भीतर, आसपास आदि।
   iii. **परिमाणवाचक** :– जिन शब्दों से क्रिया के परिमाण या मात्रा से सम्बन्धित विशेषता का पता चलता है। परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहलाते है। जैसे –
      a) वह दूध **बहुत** पीता है।
      b) वह **थोड़ा** ही चल सकी।
      c) **उतना** खाओ **जितना** पचा सको।
   iv. **रीतिवाचक** :– जिससे क्रिया के होने या करने के ढ़ग का पता चले, वे रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते है। जैसे –
      a) **शनैः शनैः** जाता है।
      b) **सहसा** बम फट गया।
      c) निश्चिय पूर्वक करूँगा।

2. **सम्बन्ध बोधक** :– जिस अव्यय शब्द से संज्ञा अथवा सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ प्रकट होता है, उसे सम्बन्ध बोधक अव्यय कहते है। जैसे–
   i. उसके सामने मत ठहरो।
   ii. पेड़ के नीचे बैठो
   ➡ से पहले, के भीतर, की ओर, की तरफ, के बिना, के अलावा, के बगैर, के बदले, की जगह, के साथ, के संग, के विपरीत आदि।
3. **समुच्चय बोधक या योजक** :– जो अव्यय दो शब्दों अथवा दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं उन्हें समुच्चय बोधक अव्यय कहते है। जैसे– और, तथा, एवं, मगर, लेकिन, किन्तु, परन्तु, इसलिए, इस कारण, अतः, क्योंकि, ताकि, या, अथवा, चाहे आदि।

4. **विस्मयादि बोधक** :– जिन अविकारी शब्दों से हर्ष, शोक, आश्चर्य घृणा, दुख, पीड़ा आदि का भाव प्रकट हो उन्हे विस्मयादि बोधक अव्यय कहते हैं जैसे – ओह!, हे!, वाह!, अरे!, अति सुंदर!, उफ!, हाय!, धिक्कार!, सावधान!, बहत अच्छा!, तौबा–तौबा!, अति सुन्दर आदि।

काल

- क्रिया के होने या करने के समय को काल कहते हैं।
- **इसके तीन भेद हैं–**

1. **वर्तमान काल** :– क्रिया के जिस रुप से यह पता चले कि काम अभी हो रहा है। इसके तीन भेद है।
   i. **सामान्य वर्तमान** :– क्रिया का वह रूप जिससे काम के वर्तमान समय में सामान्यतः होने का बोध हो। जैसे – मोहन जाता है।
   ii. **अपूर्ण वर्तमान** :– क्रिया का वह रूप जिससे मालूम होता है कि काम शुरू हो गया है और अभी जारी है। जैसे – मोहन जा रहा है।
   iii. **संदिग्ध वर्तमान** :– क्रिया का वह रूप जिससे मालूम होता है कि क्रिया वर्तमान में ही है, किन्तु उसके होने में सन्देह हो। जैसे – मोहन जाता होगा।

2. **भूतकाल** :– क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि काम बीते हुए समय में पूरा हो गया है। इसके छः भेद है।
   i. **सामान्य भूत** :– क्रिया के जिस रूप से यह मालूम हो कि काम बीते हुए समय में सामान्यतः पूरा हो गया। जैसे – मोहन ने साप देखा।
   ii. **आसन्न भूत** :– क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि काम अभी–2 पूरा हुआ है। जैसे – मोहन ने साँप देखा है।
   iii. **पूर्ण भूत** :– क्रिया के जिस रुप से यह ज्ञात हो कि काम बहुत पहले पूरा हो चुका था। जैसे – उसने साँप देखा था।
   iv. **अपूर्ण भूत** :– क्रिया के जिस रुप से क्रिया का भूतकाल में होना पाया जाए, लेकिन पूर्ण हुआ या नहीं ज्ञात न हो, उसे अपूर्ण भूत कहते है। जैसे – मोहन साँप देख रहा था।
   v. **संदिग्ध भूत** :– जिस क्रिया के करने या होने में संदेह हो उसे संदिग्ध भूत कहते है। जैसे– मोहन ने साँप देखा होगा।
   vi. **हेतु हेतुमद भूत** :– क्रिया के जिस रुप से कार्य के भूतकाल में होने या किए जाने की शर्त पाई जाए, उसे हेतु हेतुमद भूत कहते है। जैसे – यदि साँप देखता तो चला जाता।

3. **भविष्य काल** :– क्रिया के जिस रुप से किसी काम का आने वाले समय में किया जाना या होना ज्ञात हो उसे भविष्य काल कहते है। इसके दो भेद है।
   i. **सामान्य भविष्य** :– क्रिया के जिस रूप से काम का सामान्य रूप से भविष्य में किया जाना या होना पाया जाए उसे सामान्य भविष्य कहते है। जैसे–
      a) माता जी तीर्थ यात्रा पर जाएँगी ।
      b) मै प्रातः कॉलेज जाऊँगा।
   ii. **सम्भाव्य भविष्य** :– क्रिया का वह रूप जिससे काम के भविष्य में होने या किए जाने की सम्भावना है, पर निश्चित नहीं, उसे सम्भाव्य भविष्य कहते है। जैसे– शायद कल सवेरे वह आ जाए।

वाच्य

- क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि वाक्य में क्रिया का मुख्य सम्बन्ध कर्ता, कर्म या भाव से है, वह वाच्य कहलाता है इसके तीन भेद है।

1. **कर्तृवाच्य** :– जिस वाक्य में कर्ता मुख्य हो और क्रिया कर्ता के लिंग, वचन एवं पुरूष के अनुसार हो, उसे कर्तृवाच्य कहते है। जैसे –

a) लड़किया बाजार जा रही है।
b) मै रामायण पढ़ रही है।
c) कुमकुम खाना खाकर सो गई।

➧ इन वाक्यों में जा रही है, पढ़ रहा हूँ, सो गई ये सभी क्रियाएं कर्ता के अनुसार आई है।

2. **कर्मवाच्य** :– जिस वाक्य में कर्म मुख्य हो तथा इसकी सकर्मक क्रिया के लिंग, वचन व पुरूष कर्म के अनुसार हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं। जैसे –
   a) लड़कियों द्वारा बाजार जाया जा रहा है।
   b) मेरे द्वारा रामायण पढ़ी जा रहीं है।
   c) वर्षा से पुस्तक पढ़ी गई।

➧ इन वाक्यों में पढ़ी जा रहीं है, पढी गई क्रियाएं कर्म के लिंग, वचन, पुरूष के अनुसार आई है।

3. **भाववाच्य** :– जिस वाक्य में अकर्मक क्रिया का भाव मुख्य हो, उसे भाववाच्य कहते हैं जैसे –
   a) हमसे वहाँ नहीं ठहरा जाता।
   b) उससे आगे क्यों नहीं पढ़ा जाता।
   c) मुझसे शोर में नहीं सोया जाता।

➧ इन वाक्यों में ठहरा जाता, पढ़ा जाता और सोया जाता क्रियाएं भाववाच्य की है।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. लड़किया बाजार जा रही है।	1. लड़कियों द्वारा बाजार जाया जा रहा है।
2. मैं रामायण पढ़ रहा हूँ।	2. मेरे द्वारा रामायण पढ़ी जा रही है।
3. ममता ने रामायण पढ़ी।	3. ममता से रामायण पढ़ी गई।
4. लता गाना गाएगी।	4. लता से गाना गाया जाएगा।
5. धर्मवीर वेद पढ़ेगा।	5. धर्मवीर से वेद पढ़ा जाएगा।
6. तुम फूल तोड़ोगे।	6. तुमसे फूल तोड़े जाएँगे।
7. नौकर चाय लाएगा।	7. नौकर द्वारा चाय लाई जाएगी।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1. राम तेज दौड़ता है।	1. राम से तेज दौड़ा जाता है।
2. मैं सर्दियों में नहीं नहाता।	2. मुझसे सर्दियों में नहीं नहाया जाता।
3. आशा नहीं हँसती।	3. आशा से नहीं हँसा जाता।
4. बच्चा खूब सोया।	4. बच्चे से खूब सोया गया।
5. रमा नहीं पढ़ती।	5. रमा से पढ़ा नहीं जाता।
6. मैं हँसता हूँ।	6. मुझसे हँसा जाता है।
7. मोर ऊँचा नहीं उड़ता।	7. मोर से ऊँचा नहीं उड़ा जाता ।

वाक्य

➢ सार्थक शब्द या शब्दों का वह समूह जिससे वक्ता का भाव स्पष्ट हो जाए, वाक्य कहलाता है।

➢ वाक्य के दो अंग होते हैः–

1. **उद्देश्य** :– वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं। जैसे – बच्चे खेल रहे हैं, पक्षी ड़ाल पर बैठा है।
   ➧ इन वाक्यों में बच्चे और पक्षी के विषय में कुछ कहा गया हैं। अतः ये शब्द उद्देश्य हैं।

2. **विधेय** :– उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं। उपर के वाक्यों में ''खेल रहे हैं'' और ''ड़ाल पर बैठा है'' विधेय है।

➢ **संरचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं:–**

1. **सरल वाक्य** :– जिस वाक्य में केवल एक उद्देश्य और एक विधेय हो, उसे सरल वाक्य कहते है। जैसे –
   a) राम ने रावण को मारा।
   b) आशा अच्छा गाती है।
   c) परिश्रमी बालक सफल होते हैं।

➡ उपर के वाक्यों में राम, आशा और परिश्रमी बालक उद्देश्य है और वाक्यों के शेष भागों का विधेय कहते है।

2. **मिश्रित वाक्य** :– जिस वाक्य में एक उपवाक्य प्रधान होता है और दूसरा उपवाक्य उस पर आश्रित होता है, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं। जैसे –
   a) जब मै घर से निकला तब वर्षा हो रही थी।
   b) यदि तुम आओगे तो हम भी चलेगे।
   c) वह काम हो गया है जिसे करने के लिए आपने कहा था।

➡ मिश्रित वाक्यों की मुख्य पहचान यह है कि उनमें जब, तब, जो, जितना, जहाँ, जैसा, कैसा, यदि, क्योंकि आदि योजक अव्ययों में से किसी एक का प्रयोग किया जाता है।

3. **संयुक्त वाक्य** :– जिस बडे वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य जुड़े हुए हो, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। संयुक्त वाक्य और तथा, अथवा, नही ंतो, किन्तु, परन्तु आदि योजक अव्ययों को लगाने से बनते है। जैसे –
   a) रमेश ने काम किया और वह अपने घर चला गया।
   b) वह चला तो था, परन्तु रास्ते से लौट गया।
   c) राहुल विद्यालय जाता है और मन लगाकर पढ़ता है।

➢ **अर्थ के आधार पर वाक्यों के भेद** :–

1. **विधानवाचक वाक्य (सकारात्मक वाक्य)** :– समान्य कथन या किसी वस्तु या व्यक्ति की स्थिति का बोध करने वाले वाक्य कथनात्मक वाक्य कहे जाते हैं। जैसे –
   a) उसकी पत्नी बहुत बीमार हैं।
   b) लड़कियाँ नृत्य कर रहीं है।

2. **नकारात्मक या निषेधवाची वाक्य** :– इन वाक्यों में कथन का निषेध किया जाता है। सामान्यतः हिन्दी में सकारात्मक वाक्यों में 'नहीं', 'न', 'मत' लगाकर नकारात्मक वाक्य बनाए जाते हैं। जैसे –
   a) वे बाजार गए हैं। a) वे बाजार नहीं गए।
   b) आप इधर बैठे। b) आप इधर न बैंठे।
3. **आज्ञार्थक या विधिवाचक वाक्य** :– जिन वाक्यों में आज्ञा, निर्देश, प्रार्थना या विनय आदि का भाव प्रकट होता है, आज्ञार्थक वाक्य कहे जाते हैं जैसे –
   a) निकल जाओ कमरे से बाहर।
   b) सारा सामान खरीद लाना।
4. **प्रश्नवाचक वाक्य** :– प्रश्नवाचक वाक्यों में वक्ता कोई–न–कोई प्रश्न पूछता है जैसे –
   a) क्या आप आगरा जा रहीं हैं ?
   b) क्या उसने झूठ बोला था ?

5. **इच्छावाचक वाक्य** :– इन वाक्यों में वक्ता अपने लिए या दूसरों के लिए किसी–न–किसी इच्छा के भाव को प्रकट करता है जैसे –
   a) आज तो कहीं से पैसे मिल जाएँ।
   b) आपकी यात्रा शुभ हो।
6. **संदेहवाचक** :– इन वाक्यों में वक्ता प्रायः संदेह की भावना को प्रकट करता है। जैसे –
   a) शायद आज बारिश हो!
   b) हो सकता है आज धूप न निकले।
7. **विस्मयादिबोधक वाक्य** :– इन वाक्यों में विस्मय, आश्चर्य, घृणा, प्रेम, हर्ष, शोक आदि के भाव अचानक वक्ता के मुँह से निकल पड़ते हैं। जैसे –
   a) ओह ! कितना सुन्दर दृश्य है।
   b) हाय ! मैं मर गया।
8. **संकेतवाचक वाक्य** :– इन वाक्यों में किसी–न–किसी शर्त की पूर्ति का विधान किया जाता है इसीलिए इनको शर्तवाची वाक्य भी कहते हैं। जैसे –
   a) यदि तुम भी मेंरे साथ रहोगी तो मुझे अच्छा लगेगा।
   b) वर्षा होती तो अनाज पैदा होता।

उपसर्ग

- जो सार्थक शब्दों से पहले जुड़कर उनके अर्थ को बदल देते हैं या उनकी विशेषता प्रकट करते हैं उन्हे उपसर्ग कहते हैं उपसर्ग के भेद :–
  1. संस्कृत उपसर्ग
  2. हिन्दी उपसर्ग
  3. फारसी उपसर्ग

संस्कृत उपसर्ग

उपसर्ग	उदाहरण
प्र	प्रगति, प्रारम्भिक, प्रबल, प्रसन्न
सम्	संस्था, सम्मान, संगति, संस्कार, सम्पूर्ण
अव	अवगुण, अवनति, अवतरण
निर्	निर्बल, निर्जन, निर्धन, निर्माण
दुस्	दुष्कर्म, दुष्चरित्र, दुस्साहस
दुर्	दुर्दशा, दुर्जन, दुर्गम
नि	निवारण, नियुक्त, निधन
अधि	अधिकर, अधिपति, अध्यक्ष
अति	अत्युत्तम, अत्यन्त, अतिकाल, अत्याचार
सु	सुड़ौल, सुअवसर, सुगम
उत्	उत्थान, उत्पन्न, उद्धार, उत्कर्ष, उन्मुक्त, उत्तम
अभि	अभ्यास, अभिमुख, अभयागत, अभिमान
प्रति	प्रत्यक्ष, प्रतिकूल, प्रत्येक
परि	परिजन, परिक्रमा, परिपूर्ण
उप	उपकार, उपमान, उपमन्त्री, उपयोग
सु	स्वच्छ, स्वागत, सुकर्म, सुकर
सत्	सद्भावना, सत्पुरुष, सत्कर्म, सद्गति, सज्जन, सत्संग
अधः	अधोपतन, अधोगति, अधोमुखी, अधस्थल
अप	अपमान, अपयश, अपहरण, अपराध, अपकर्ष

निस्	निस्तार, निस्सार, निस्तेज, निश्चय, निष्कृति

हिन्दी के उपसर्ग

उपसर्ग	उदाहरण
अन	अनपढ़, अनजान, अनहोनी, अनमोल
भर	भरपूर, भरमार, भरसक, भरपेट
नि	निहत्था, निकम्मा, निड़र
सु	सुपुत्र, सुड़ौल, सुजान
दु	दुबला, दुलारा, दुधारू, दुसाध्य

अंग्रेजी उपसर्ग

उपसर्ग	उदाहरण
ड़िप्टी	ड़िप्टी क्लेक्टर, डिप्टी इन्सपेक्टर
हाफ	हाफटाइम, हाफपैंट

फारसी उपसर्ग

उपसर्ग	उदाहरण
कम	कमसिन, कमबखत, कमजोर, कमहिम्मत
खुश	खुशमिजाज, खुशकिस्मत, खुशखबरी, खुशबू
ना	नालायक, नाकाम, नाकामी, नाकबूल
बा	बाअदब, बाआराम, बाईमान
बे	बेरोजगार, बेईमान, बेकाबू, बेकार, बेहोश
बद	बदकिस्मत, बदमाश, बदनाम, बदनसीब, बदतर
सर	सरकार, सरताज, सरनाम, सरपरस्त
हम	हमशक्ल, हमदम, हमउम्र, हमदर्द, हमदम
हर	हरदम, हररोज, हरवक्त, हरसंमय, हरएक

प्रत्यय

- प्रत्यय वे शब्दांश हैं जो शब्द के अन्त में लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं।
- प्रत्यय के तीन भेद हैः–

1. **कृत प्रत्यय** :– ये प्रत्यय क्रिया के धातु रूपों में लगकर संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते है।

प्रत्यय	उदाहरण
हार	होनहार, पालनहार, खेपनहार
ऊ	खाऊ, चलाऊ, बिकाऊ
अन	झाड़न, ढक्कन, बेलन
आई	लड़ाई, चढ़ाई, कमाई, लिखाई
आवा	भुलावा, छलावा, पछतावा, दिखावा
अन्त	भिंड़त, घड़ंत

कर	जाकर, पढ़कर, देखकर
ते ही	पढ़ते ही, चलते ही, उठते ही
ना	दौड़ना, बैठना, सोना
उक	भिक्षुक, भावुक

2. **तद्धित प्रत्यय** :– ये प्रत्यय क्रिया से अन्य शब्दों जैसे – संज्ञा, विशेषण, अव्यव आदि के बाद लगते है और प्राय– संज्ञा/विशेषण बनाते हैं।

प्रत्यय	उदाहरण
वाला	धनवाला, अखबारवाला, सब्जीवाला, ग्वाला
वान	धनवान, गुणवान, पुत्रवान, कोचवान
इक	धार्मिक, शैक्षिक, नैतिक, नागरिक, दैनिक
ता	नीचता, दुष्टता, पशुता, ममता
इत	क्रोधित, उत्साहित, शोभित, अंकित
पन	बचपन, लड़कपन, गंवारपन, अपनापन
वट	लिखावट, बनावट, सजावट, दिखावट
इया	खटिया, लुटिया, ड़िबिया
ई	पहाड़ी, रस्सी, चोरी, खेती, हँसी, बोली
कार	कलाकार, पत्रकार, साहित्यकार, चित्रकार
आर	सुनार, लुहार, चमार

3. **स्त्री प्रत्यय** :– स्त्री प्रत्यय पुल्लिंग शब्दों के अन्त में लगते हैं और उन्हें स्त्रीलिंग बना देते है।

संन्धि

- अति समीप आए हुए दो वर्णो को मिलाने से जो परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं।
- **इसके तीन भेद हैं**:–

1. **स्वर सन्धि** :– स्वरों का स्वरों के साथ मेल होने पर स्वरों में परिवर्तन होता है उसे स्वर सन्धि कहते हैं।
   - **इसके पांच प्रकार है** :–
     i. **दीर्घ सन्धि** :– ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, ई, उ, आ से परे क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ आ, आ, इ, उ आ जाए तो दोनो मिलकर क्रमशः दीर्घ आ, ई, ऊ हो जाते हैं। जैसे –

     - अ + अ = आ

अधिक + अधिक	=	अधिकाधिक	वेद + अंत	=	वेदान्त
चर + अचर	=	चराचर	चरण + अमृत	=	चरणामृत
दीक्षा + अंत	=	दीक्षान्त	दया + आनन्द	=	दयानन्द
धर्म + अर्थ	=	धर्मार्थ	शत + अब्दी	=	शताब्दी
पुरूष + अर्थ	=	पुरूषार्थ	मुर + अरि	=	मुरारि
महा + आशय	=	महाशय	राम + अयन	=	रामायण
राम + आनन्द	=	रामानन्द	शास्त्र + अर्थ	=	शास्त्रार्थ

➧ उ + उ = ऊ, उ + ऊ = ऊ, ऊ + उ = ऊ, ऊ + ऊ = ऊ

गुरू + उपदेश	=	गुरूपदेश	भानु + उदय	=	भानूदेय
भू + उर्ध्व	=	भूर्ध्व	वधू + ऊर्जा	=	वधूर्जा
सिन्धु + उर्मि	=	सिन्धूर्मि	लघु + उर्मि	=	लघूर्मि
वधू + उल्लेख	=	वधूल्लेख			

➧ ऋ + ऋ = ऋ

पितृ + ऋद्धि	=	पितृद्धि	पितृ + ऋण	=	पितृण

ii. **यण् सन्धि** :– इ, ई, उ, ऊ, ऋ से परे कोई असवर्ण स्वर हो तो इ, ई को य्, उ, ऊ को व् और ऋ को र् हो जाता है।

➧ इ, ई + विजातीय स्वर = य्

अति + आवश्यक	=	अत्यावश्यक	अति + अन्त	=	अत्यन्त
अति + अल्प	=	अत्यल्प	अभि + उदय	=	अभ्युदय
अभि + आगत	=	अभ्यागत	अति + आचार	=	अत्याचार
इति + आदि	=	इत्यादि	उपरि + उक्त	=	उपर्युक्त
नि + ऊन	=	न्यून	प्रति + उत्तर	=	प्रत्युत्तर
प्रति + उत	=	प्रत्युत	प्रति + आशा	=	प्रत्याशा
प्रति + उपकार	=	प्रत्युपकार	रीति + अनुसार	=	रीत्यनुसार
विधि + अनुकूल	=	विध्यनुकूल	प्रति + एक	=	प्रत्येक
यदि + अपि	=	यद्यपि			

➧ उ, ऊ + विजातीय स्वर = व

अनु + अय	=	अन्वय	अनु + एषण	=	अन्वेषण
गुरू + आज्ञा	=	गुर्वाज्ञा	वधु + आगमन	=	वध्वागमन
सु + अल्प	=	स्वल्प	सु + आगत	=	स्वागत

➧ ऋ + विजातीय स्वर = र्

पितृ + अर्पण	=	पित्रर्पण	पितृ + आदेश	=	पित्रादेश
पितृ + अनुमति	=	पित्रनुमति	मातृ + अनुमति	=	मात्रनुमति
मातृ + आज्ञा	=	मात्राज्ञा			

iii. **गुण संधि** :– यदि अ, आ से आगे इ, ई हो तो दोनों का 'ए', उ, ऊ हो तो दोनों को 'ओ' और अ, आ से आगे ऋ हो तो दोनों का 'अर' हो जाता है।

➧ आ, आ + इ,ई = ए

उमा + ईश	=	उमेश	उप + इन्द्र	=	उपेन्द्र
गण + ईश	=	गणेश	गज + इन्द्र	=	गजेन्द्र
धर्म + इन्द्र	=	धर्मेन्द्र	नर + ईश	=	नरेश
मृग + इन्द्र	=	मृगेन्द्र	परम + ईश्वर	=	परमेश्वर
महा + इन्द्र	=	महेन्द्र	जल + ऊर्मि	=	जलोर्मि
महा + उदय	=	महोदय	महा + उत्सव	=	महोत्सव
यमुना + उर्मि	=	यमुनोर्मि	सूर्य + उदय	=	सूर्योदय
देव + इन्द्र	=	देवेन्द्र	रमा + ईश	=	रमेश
महा + ईश	=	महेश	भारत + इन्दु	=	भारतेन्दु

➡ अ, आ + उ, ऊ = ओ

ईश्वर + उपासना	=	ईश्वरोपासना	चन्द्र + उदय	=	चन्द्रोदय
प्रश्न + उत्तर	=	प्रश्नोत्तर	भाग्य + उदय	=	भाग्योदय
पुत्र + उत्सव	=	पुत्रोत्सव	सर्व + उच्च	=	सर्वोच्च
वीर + उचित	=	वीरोचित	मानव + उचित	=	मानवोचित

➡ अ, आ + ऋ = अर्

ग्रीष्म + ऋतु	=	ग्रीष्मर्तु	वर्षा + ऋतु	=	वर्षर्तु
देव + ऋषि	=	देवर्षि	महा + ऋषि	=	महर्षि
ब्रह्म + ऋषि	=	ब्रह्मर्षि			

iv. **वृद्धि सन्धि** :– अ, आ से आगे ए, ऐ हो तो दोनों को ऐ और ओ, औ हो तो दोनों को औ हो जाता है।

➡ अ, आ, + ए, ऐ = ऐ

तथा + एवं	=	तथैव	एक + एक	=	एकैक
तदा + एव	=	तदैव	लठ + एत	=	लठैत
सदा + एव	=	सदैव	महा + ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य
मत + ऐक्य	=	मतैक्य	धन + ऐश्वर्य	=	धनैश्वर्य
लोक + एषणा	=	लोकैषणा			

➡ अ, आ + ओ, औ = औ

जल + ओध	=	जलौध	वन + ओषधि	=	वनौषधि
परम + ओषध	=	परमौषध	महा + ओज	=	महौज

v. **अयादि सन्धि** :– ए, ऐ, ओ, औ इसके आगे यदि इनके भिन्न स्वर हो तो ए को अय्, ऐ को आय्, ओ को अव् और औ को आव् हो जाता है। जैसे –

➡ ए + कोई स्वर = अय्

चे + अन	=	चयन	ने + अन	=	नयन

➡ ऐ + कोई स्वर = आय्

गै + अक	=	गायक	गै + अन	=	गायन
नै + अक	=	नायक	सै + अक	=	सायक

➡ ओ + कोई स्वर = अव्

गो + एषणा	=	गवेषणा	पो + अन	=	पवन
भो + अन	=	भवन			

➡ औ + कोई स्वर = आव्

पौ + अन	=	पावन	पौ + अक	=	पावक
नौ + इक	=	नाविक	भौ + उक	=	भावुक

2. **व्यंजन संधि** :– व्यंजन के आगे स्वर या व्यंजन आने से जो सन्धि होती है, उसे व्यंजन सन्धि कहते है।

उत् + चारण	=	उच्चारण	विपत् + जाल	=	विपज्जाल
सत् + चरित्र	=	सच्चरित्र	सत् + जन	=	सज्जन
उत् + लास	=	उल्लास	शरत् + चन्द्र	=	शरच्चन्द्र
उत् + ज्वल	=	उज्जवल	उत् + डयन	=	उड्डयन
तट् + टीका	=	तट्टीका	उत् + उन्नति	=	उन्नति
उत् + नत	=	उन्नत	उत् + मूलन	=	उन्मूलन
उत् + मत	=	उन्मत	जगत् + नाथ	=	जगन्नाथ
तत् + मय	=	तन्मय	दिक् + नाग	=	दिङ्नाग
षट् + मास	=	षण्मास	चित् + मय	=	चिन्मय
उत् + गार	=	उद्गार	उत् + घाटन	=	उद्घाटन
उत् + वेग	=	उद्वेग	उत् + भव	=	उद्भव
उत् + यान	=	उद्यान	जगत् + ईश	=	जगदीश
सत् + आनन्द	=	सदानन्द	जयत् + रथ	=	जयद्रथ
तत् + भव	=	तद्भव	दिक् + गज	=	दिग्गज
दिक् + दर्शन	=	दिग्दर्शन	वाक् + ईश	=	वागीश
सत् + गति	=	सद्गति	सत् + जन	=	सज्जन
उत् + हार	=	उद्धार	उत् + हत	=	उद्धृत
उत् + हरण	=	उद्धरण	तत् + हित	=	तद्धित
उत् + श्रंखल	=	उच्छृंखल	परि + छेद	=	परिच्छेद
वि + छेद	=	विच्छेद	वृक्ष + छाया	=	वृक्षच्छाया
सन्धि + छेद	=	सन्धिच्छेद	अहम् + कार	=	अंहकार
सम् + पूर्ण	=	सम्पूर्ण	सम् +तोष	=	संतोष
सम् + तति	=	सन्तति	सम् + कल्प	=	संकल्प
सम् + सार	=	संसार	सम + योग	=	संयोग
सम् + वाद	=	संवाद	सम् + यम	=	संयम
पोष् + अन	=	पोषण	ऋ + न	=	ऋण
निर + नय	=	निर्णय	परि + नाम	=	परिणाम
नि + सिद्ध	=	निषिद्ध	उत् + लंघन	=	उल्लंघन
उत् + लास	=	उल्लास	उत् + लेख	=	उल्लेख
तत् + लीन	=	तल्लीन			

3. **विसर्ग संधि** :–

मनः + अनुकूल	=	मनोनुकूल	अधः + लिखित	=	अधोलिखित
अधः + गति	=	अधोगति	तपः + वन	=	तपोवन
मनः + रजन	=	मनोरंजन	मनः + रम	=	मनोरम
मनः + योग	=	मनोयोग	निर् + रव	=	नीरव
निर् + रोग	=	निरोग	निर् + रस	=	नीरस
दुः + गुण	=	दुर्गुण	दुः + गति	=	दुर्गति
दुः + दशा	=	दुर्दशा	दुः + भाग्य	=	दुर्भाग्य
निः + मल	=	निर्मल	वयः + वृद्ध	=	वयोवृद्ध
निः + गुण	=	निर्गुण	दुः + लभ	=	दुर्लभ
दुः + शासन	=	दुश्शासन	दुः + चरित्र	=	दुश्चरित्र

दुः + कर्म	=	दुष्कर्म	निः + काम	=	निष्काम
निः + कपट	=	निष्कपट	दुः + तर	=	दुस्तर
निः + सन्देह	=	निस्सन्देह	नमः + ते	=	नमस्ते
नमः + कार	=	नमस्कार	मनः + ताप	=	मनस्ताप

समास

➢ परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो अथवा दो से अधिक शब्दों के मेल का नाम समास है।
➢ **समास के भेद :–**

1. **अव्ययीभाव समास :–** जिस समास का पहला खण्ड़ प्रधान हो, वह अव्ययीभाव समास होता है। इसमें पहला खण्ड़ अव्यय होता है।

इसकी पहचान :– यदि समस्त पद के आरम्भ में भर निर्, प्रति, यथा, बे, आ, ब, उप, यावत्, अधि, अनु आदि।

यथाशक्ति	=	शक्ति के अनुसार
यथागति	=	गति के अनुसार
हाथों–हाथ	=	हाथ हाथ में
प्रतिक्षण	=	क्षण क्षण
प्रत्यक्ष	=	आंखों के प्रति
रातों रात	=	रात ही रात में
आजीवन	=	जीवन भर
भरपेट	=	पेट भर कर
निस्सन्देह	=	सन्देह के बिना
हर समय	=	समय में
साफ–साफ	=	बिल्कुल साफ
बेखटक	=	बिना खटक के
अनुरूप	=	रूप के योग्य
हर–घड़ी	=	घड़ी–घड़ी

2. **तत्पुरूष समास :–** जहाँ पूर्व विशेषण होने के कारण गौण तथा उत्तर पद विशेष्य होने के कारण प्रधान होता है। वहाँ तत्पुरूष समास होता है।

i. **कर्म तत्पुरूषः–**

स्वर्गगत	=	स्वर्ग को गत
यशप्राप्त	=	यश को प्राप्त
शरणागत	=	शरण को आगत
प्रयागगत	=	प्रयाग को गत

ii. **करण तत्पुरूष :–**

रेखांकित	=	रेखा से अंकित
तुलसीकृत	=	तुलसी द्वारा कृत
मदान्ध	=	मद से अन्ध
मनमानी	=	मन से मानी
प्रभुदत	=	प्रभु द्वारा दत
मुहमांगा	=	मुंह से मांगा

प्रसादकृत	=	प्रसाद द्वारा कृत

iii. सम्प्रदान तत्पुरूष :–

हवन सामग्री	=	हवन के लिए सामग्री
सत्याग्रह	=	सत्य के लिए आग्रह
शयनकक्ष	=	शयन के लिए कक्ष
यज्ञधृत	=	यज्ञ के लिए धृत
गुरूदक्षिणा	=	गुरू के लिए दक्षिणा
रसोईघर	=	रसाई के लिए घर

iv. अपादान तत्पुरूष :–

जन्मरोगी	=	जन्म से रोगी
जीवनमुक्त	=	जीवन से मुक्त
चोरभय	=	चोर से भय
धनहीन	=	धन से हीन
ऋणमुक्त	=	ऋण से मुक्त
पथभ्रष्ट	=	पथ से भ्रष्ट
देशनिकाला	=	देश से निकाला

v. सम्बन्ध तत्पुरूष :–

विश्वासपात्र	=	विश्वास का पात्र
देवस्थान	=	देव का स्थान
माखनचोर	=	माखन का चोर
रामकहानी	=	राम की कहानी
पवनपुत्र	=	पवन का पुत्र
अमचूर	=	आम का चूर
दुग्धधार	=	दुग्ध की धार
राष्ट्रपति	=	राष्ट्र का पति
राजपुत्र	=	राजा का पुत्र
पनचक्की	=	पानी की चक्की
पितृभक्त	=	पिता का भक्त
पर्णशाला	=	पर्णो की शाला

vi. अधिकरण तत्परूष :–

आत्म–विश्वास	=	आत्मा पर विश्वास
रणधीर	=	रण में धीर
धर्मवीर	=	धर्म में वीर
रसमग्न	=	रस में मग्न
आपबीती	=	आप पर बीती
स्वर्गवास	=	स्वर्ग में वास
ग्रामवास	=	ग्राम में वास

vii. **अलुक तत्पुरूष** :– जिस तत्पुरूष के पहले पद की विभक्ति (कारक–चिह्न) का लोप न होकर उसी में समाहित हो जाती है।

युधिष्ठिर	=	युद्ध में स्थिर
खेचर	=	आकाश में चरने वाला
वनचर	=	वन में चरने वाला

viii. **नञ् तत्पुरूष** :– जिसका पहला पद निषेधवाचक रहे। इसका समस्त पद अ या अन् से शुरू होता है।

अछूत	=	जो छूत न हो
अनादि	=	न आदि
असभ्य	=	न सभ्य
अधर्म	=	न धर्म
अनहोनी	=	जो न होनी हों
अनन्त	=	न अन्त
असम्भव	=	न सम्भव

3. **कर्मधारय समास** :– जब समस्त पदों के खण्ड़ों में परस्पर विशेष्य विशेषण भाव अथवा उपमान उपमेय भाव सम्बन्ध होता है, वह कर्मधारय समास होता है।

वचनामृत	=	वचन रूपी अमृत
चन्द्रमुख	=	चन्द्र जैसा मुख
घनश्याम	=	घन जैसा श्याम
नीलकण्ठ	=	नील जैसा कण्ठ
विद्याधन	=	विद्या रूपी धन
महावीर	=	महान् वीर
महादेव	=	महान् देव
सज्जन	=	सत् जन
आशा किरण	=	आशा रूपी किरण
लाल मिर्च	=	लाल जो मिर्च
महाराज	=	महान् जो राजा
परमात्मा	=	परम है जो आत्मा

4. **द्विगु समास** :– इसमें पूर्व पद संख्यावाचक होता है।

द्विगु	=	दो गौओं का समूह
अष्टाध्यायी	=	आठ अध्यायों का समूह
नवरात्र	=	नव रातों का समूह
त्रिफला	=	तीन फलों का समूह
चवन्नी	=	चार आनों का समूह
नवरत्न	=	नौ रत्नों का समूह
चौमासा	=	चार मासों का समूह
तिरंगा	=	तीन रंगो का समाहार
दोपहर	=	दो पहरों का समाहार

5. **द्वन्द्व समास** :– जिसमें दोनों खण्ड़ प्रधान हो। विग्रह करने पर जिसमें 'और' 'अथवा' का प्रयोग होता है।

माता–पिता	=	माता और पिता

धर्माधर्म	=	धर्म और अधर्म
सुख–दुख	=	सुख और दुख
राधा–कृष्ण	=	राधा और कृष्ण
दाल–रोटी	=	दाल और रोटी
दिन–रात	=	दिन और रात
खान–पान	=	खान और पान
देश–विदेश	=	देश और विदेश

6. **बहुब्रीहि समास** :– जहाँ समस्त पद में आए दोनों ही पद गौण होते हैं तथा ये दोनो मिलकर किसी तीसरे पद के विषय में कुछ कहते है और यह तीसरा पद ही 'प्रधान' होता है।

पीतांबर	=	पीला है अंबर (वस्त्र) जिसका – श्रीकृष्ण
त्रिलोचन	=	तीन है लोचन (नेत्र) जिसके – शिव
चतुर्भुज	=	चार है भुजाए जिसकी – विष्णु
सुलोचना	=	सुंदर है लोचन जिसके – वह स्त्री
कमलनयन	=	कमल के समान है नयन जिसके – विष्णु
गिरिधर	=	गिरि को धारण करने वाला – श्री कृष्ण
गजानन	=	गज के समान आनन है जिसका – गणेश
चतुर्मुख	=	चार हैं मुख जिसके – ब्रह्मा
तिरंगा	=	तीन रंगो वाला – भारत का राष्ट्रध्वज
दीर्घबाहु	=	दीर्घ हैं बाहु जिसकी – विष्णु
दिगंबर	=	दिशाएँ है अंबर जिसकी – शंकर
पतझड़	=	झड़ते हैं पत्ते जिसमें –विशेष ऋतु
महेश	=	महान है जो ईश – शिव
विषधर	=	विष को धारण करने वाला सांप

अलंकार

- अलंकार शब्द 'अलम्' एवं 'कार' के योग से बना हैं जिसका अर्थ है आभूषण या विभूषित करने वाला।
- इसके दो भेद है।
  1. **शब्दालंकार** :– जहाँ कथन में विशिष्ट शब्द – प्रयोग के कारण चमत्कार अथवा सौन्दर्य आ जाता है वहॉ शब्दालंकार होता है। जैसे – अनुप्रास, चमक, श्लेष
  2. **अर्थालंकार** :– जहाँ कथन विशेष में सौन्दर्य अथवा चमत्कार विशिष्ट शब्द प्रयोग पर आश्रित न होकर, अर्थ की विशिष्टता के कारण आया हो वहाँ अर्थालंकार होता है। जैसे – उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, विराधाभास

i. अनुप्रास :– जहाँ वर्णो की पुनरावृति से चमत्कार उत्पन्न होता हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है जैसे –

- कल कानन कुण्ड़ल मोर पंखा
- छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीर की
- कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि
- मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत बुलाए।
- संसार की समरस्थली में धीरता धारण करो
- चारू चंद्र की चंचल किरणे खेल रहीं थी जल थल में

ii. **यमक** :– जब एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आए और उसका अर्थ हर बार भिन्न हो वहाँ यमक अलंकार होता है।
- कहै कवि बेनी, बेनी ब्याल की चुराई लानी (बेनी–कवि, बेनी चोटी)
- रति–रति सोभा सब रति के सरीर की (रति–रति – जरा सी, रति – कामदेव की पत्नी)
- काली घटा का घमंड़ घटा (घटा– बादलों की घटा, घटा – कम होना)
- भजन कह्यौ ताते भज्यौ, भज्यौ न एको बार (भज्यौ – भजन किया, भज्यौ– भाग किया)
- कनक–कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय (कनक– सोना, कनक– धतुरा)
- माला फेरत जुग गया, फिरा न मनका फेर।
  कर का मनका ड़ारि दे, मन का मनका फेर।। (मनका – माला का दाना, मन का– हृदय का)

- जे तीन बेर खाती थी ते तीन बेर खाती हैं (तीन बेर – तीन बेर के दाने, तीन बेर – तीन बार)
- तू मोहन के उरबसी ह्वै उरबसी समान
- पच्छी पर छीने एसे परे पर छीने बीर,
  तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।

- जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे है।
- पास ही रे। हीरे की खान
  उसे खोजता कहाँ नादान
- ऊँचे घोर मंदर के अन्दर रहनवारी
  ऊँचे घोर मंदर के अंन्दर रहती है।

iii. **श्लेष** :– श्लेष का अर्थ है चिपकना । जहाँ एक शब्द एक ही बार प्रयुक्त होने पर दो अर्थ दे वहाँ श्लेष अंलकार होता है।
- <u>सुबरन</u> को ढूँढत फिरत, कवि, व्यभिचारी चोर। (सुबरन – अच्छे शब्द, सुबरन – र्स्वण)
- मधुबन की छाती को देखो, सूखी कितनी इसकी <u>कलियाँ</u> (कलियाँ– खिलने से पूर्व फूल की दशा, कलियाँ–यौवन से पहले की अवस्था)
- जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
  बारे उजियारो करै, <u>बढें</u> अँधेरो होय।। (बढ़े – बड़ा होने पर, बढ़े– बुझने पर)
- को धटि ये वृषभनुजा वे हलधर के वीर
- रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून
  पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुस, चून (पानी–चमक, पानी– प्रतिष्ठा, पानी – जल)
- नर की अरू नलनीर की गति एकै कर जोय
  जेतो नीचो ह्वै चले ततो ऊँचो हो।।
- रावन सिर सरोज बनचारी।
  चलि रघुवीर सिलीमुख धारी (सिलीमुख – बाण, भ्रमर)

i. **उपमा** :– जहाँ एक वस्तु की दूसरी वस्तु के साथ किसी गुणधर्म अथवा स्वरूप के कारण समानता दिखाई जाती है वहाँ उपमा अलंकार होता है। उपमा के चार अंग होते है।

a) **उपमेय** :– जिस वस्तु का वर्णन या तुलना की जाए उसे उपमेय कहते हैं जैसे ''नेत्र कमल के समान सुन्दर है।'' यहां नेत्र की समानता कमल से की गई हैं। अतः नेत्र उपमेंय हैं।

b) **उपमान** :– जिस पदार्थ या वस्तु से उपमा दी जाती है।, उसे उपमान कहते हैं। इसी को अप्रस्तुत भी कहा जाता हैं। जैसे– उपर्युक्त उदाहरण में नेत्र की उपमा कमल से दी गई है। अतः कमल उपमान हैं।

c) **साधारण धर्म** :– उपमेय और उपमान की जिस गुण में तुलना की जाये, उस गुण को साधारण धर्म कहते हैं। ऊपर दिए गये वाक्य में ''सुन्दर' साधारण धर्म है।

d) **वाचक** :– उपमेय और उपमान की समता प्रकट करने वाले शब्द वाचक शब्द कहलाते हैं जैसे – सा, सो, से, सी, सरिस, समान, सदृश, इव, ज्यों, जैसे, जिमि, इमि आदि वाचक शब्द होते है। उपर के उदाहरण में समान वाचक शब्द हैं।

- पीपर पात सरिस मन ड़ोला
- आनन सुन्दर चन्द्र–सा।
- हरि–पद कोमल कमल से
- उसी तपस्वी से लम्बे थे
  देवदारू दो चार खड़े।
- असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह–सी।
- यह देखिए, अरविंद–से शिशुवृंद कैसे सो रहे।
- नदिया जिनकी यशधारा–सी बहती है।
- मुख बाल–रवि–सम लाल होकर ज्वाला–सा बोधित हुआ।
- नील गगन–सा शांत ह्रदय था हो रहो
- मखमल के झूले पड़े हाथी–सा टीला
- सिंधु–सा विस्तृत और अथाह एक निर्वासित का उत्साह

ii. **रूपक** :– जहाँ गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेंय में ही उपमान का अभेद आरोप कर दिया गया हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

- मुख–चन्द्र तुम्हारा देख सखे।
  मन–सागर मेरा लहराता।
- मैया! मै तो चन्द्र–खिलौना लैहों।
- चरण–कमल बैन्दौं हरिराई।
- पायो जी मैने राम–रतन धन पायो।
- एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास।
- राम नाम मनि–दीप धरू, जीय देहरी द्वार।

iii. **उत्प्रेक्षा** :– जहाँ उपमेंय में उपमान की संभावना अथवा कल्पना कर ली गई हो, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसके बोधक शब्द हैं मनो, मानो, मनु, मनुह, जानो, जनु, जनहु, ज्यों आदि।

- मानो माई धनधन अंतर दामिनि।
- चमचमात चंचल नयन, बिच घूँघट पट छीन।
  मनहु सुरसरिता विचल, जल उछरत जुग मीन।।
- सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
  मनहुँ नीलमनि सैल पर, आतप पर्यौ प्रभात।।

- उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उसका लगा।
  मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।।

- कहती हुई यो उत्तरा के, नेत्र जल से भर गए।
  हिम के कणों से पूर्ण मानों, हो गए पंकज नए।।

- मनु दृग फारि अनेक जमुन निरखत ब्रज सोभा
- ले चला मै तुझे कनक, ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण–झनक।

वर्तनीशुद्धि / वाक्यशुद्धि

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
सम्वत	संवत्	बृज	ब्रज
चिन्ह	चिह्न (चिह्न)	पूज्यनीय	पूज्य, पूजनीय
संसारिक	सांसारिक	तत्कालिक	तात्कालिक
चेष्ठा	चेष्टा	निरोग	नीरोग
द्वारिका	द्वारका	अध्यात्मिक	आध्यात्मिक
श्रीमति	श्रीमती	शताब्दि	शताब्दी
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	उद्योगीकरण	औद्योगीकरण
उज्वल	उज्ज्वल	अरोग्यता	आरोग्य
आदर्णीय	आदरणीय	अर्ध	अर्द्ध
आध्यात्म	अध्यात्म	उपरोक्त	उपर्युक्त
उछृंखल	उच्छृंखल	घनिष्ट	घनिष्ठ
आधीन	अधीन	कृतघन	कृतघ्न
सम्पति	सम्पत्ति	श्रेष्ट	श्रेष्ठ
स्थाई	स्थायी	व्यस्क	वयस्क
सृष्ठि	सृष्टि	सप्ताहिक	साप्ताहिक
व्यवहारिक	व्यावहारिक	अगामी	आगामी
अलोकिक	अलौकिक	रात्री	रात्रि
महूर्त	मुहूर्त	निरोग	नीरोग
नर्क	नरक	द्वन्द्वता	द्वन्द्व
दंपत्ति	दंपती	दु:साहस	दुस्साहस
घुटुना	घुटना	सौदामनी	सौदामिनी
स्वास्तिक	स्वस्तिक	श्रृष्टा	स्रष्टा
साहित्यक	साहित्यिक	व्यंग	व्यंग्य
परिशिष्ठ	परिशिष्ट	पढ़ाई	पढ़ाई
अतिथी	अतिथि	प्राप्ती	प्राप्ति
प्रमाणिक	प्रामाणिक	प्रफुल्लित	प्रफुल्ल
नयी	नई	ज्योत्सना	ज्योत्स्ना
गुरू	गुरु	कौतूहल	कौतुहल
केन्द्रीयकरण	केन्द्रीकरण	कृत्यकृत्य	कृतकृत्य

कसौटी	कसौटी	कलस	कलश
कर्तव्य	कर्तव्य	अंताक्षरी	अंत्याक्षरी
कवियात्री	कवयित्री	अनाधिकार	अनधिकार
कनिष्ट	कनिष्ठ	अंतर्ध्यान	अंतर्धान
अनुकुल	अनुकूल	ऊषा	उषा
उन्तीस	उनतीस	उदंडता	उद्दंड़ता
अहिल्या	अहल्या	ग्रहस्थ	गृहस्थ
ग्रहणी	गृहिणी	अर्ध	अर्घ्य
अभीष्ठ	अभीष्ट	अलंकारिक	आलंकारिक
अनुग्रहीत	अनुगृहीत	अष्ठवक्र	अष्टावक्र
अतिश्योक्त	अतिशयोक्ति	शुभेच्छुक	शुभेच्छु
समुचय	समुच्चय	जिव्हा	जिह्वा
सहस्त्र	सहस्र	विरहणी	विरहिणी
अभ्यस्थ	अभ्यस्त	बलिष्ट	बलिष्ठ
मुर्हरम	मुहर्रम	श्रंग	शृंग
अनुगृह	अनुग्रह	त्यौहार	त्योहार
दधिची	दधीचि	मुमुर्षू	मुमूर्ष
ईलायची	इलायची	केकेची	कैकेयी
जुगनु	जुगनू	परिणित	परिणीत
राजतंगणी	राजतरंगिणी	ओष्ट	औष्ठ
श्रीमत	श्रीमत्	तिलांजली	तिलांजलि
न्यौछावर	न्योछावर	हथिनी	हथनी
अविछन्न	अवच्छिन्न	कोशल्या	कौशल्या
ज्योतिषि	ज्योतिषी	श्रीमान	श्रीमान्
श्रृंखला	शृंखला		

शब्द और पद

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अश्रु	आँसू	आम्र	आम
अग्नि	आग	इक्षु	ईख
उष्ट्र	ऊँट	कर्पूर	कपूर
कोकिल	कोयल	गोधूम	गेहूँ
गर्दभ	गदहा	घोटक	घोड़ा
ज्येष्ठ	जेठ	निद्रा	नींद
पत्र	पत्ता	पीत	पीला
मित्र	मीत	सूर्य	सूरज
हस्त	हाथ	कर्म	काम
कूप	कुआँ	जिह्वा	जीभ
कातर	कायर	लोक	लोग
शिक्षा	सीख	कर्ण	कान
काष्ठ	काठ	क्षेत्र	खेत
चन्द्र	चाँद	ताम्र	ताँबा

प्रस्तर	पत्थर	मृत्यु	मौत
श्वास	साँस	शृंगाल	सियार
हस्ती	हाथी	मृत्तिका	मिट्टी
चटका	चिड़िया	कपाट	किवाड़
दधि	दही	भिक्षा	भीख
ओष्ठ	होठ	सर्प	साँप
क्षीर	खीर	वत्स	बच्चा
दुग्ध	दूध	घृत	घी
रात्रि	रात		

पर्यायवाची

1. असुर : दैत्य, दानव, दनुज, इन्द्रारि, राक्षस, आशर, रात्रिचर
2. अमृत : पीयूष, सुधा, अमिय, जीवनदायक, अमित, जीवन
3. आग : पावक, दहन, अनल, ज्वलन, अग्नि, वैश्वानर, वह्नि, धनंजय, रोहिताश्व, वायु–सखा, कृशानु, धूमकेतु
4. आकाश : ख, नभ, गगन, अम्बर, व्योम, आसमान, अनन्त, द्युलोक, तारापथ, अभ्र
5. अहंकार : गर्व, अभिमान, घमण्ड़, अहं, दर्प
6. अपमान : उपेक्षा, अनादर, परिभव, परिभाव, अवज्ञा, रीढ़ा, अवमानना।
7. अंधकार : अँधेरा, ध्वान्त, तम, तिमिर
8. अतिथि : पाहुन, अभ्यागत, मेहमान, आगन्तुक
9. अनुपम : अपूर्व, अतुल, अद्वितीय, अनोखा, अनन्य
10. अरण्य : बिपिन, कानन, वन, जंगल, अटवी, कांतार
11. अश्व : घोड़ा, घोटक, तुरंग, सैंधव, हय, बाजि
12. आँख : नेत्र, नयन, लोचन, विलोचन, चक्षु, दृग, अक्षि, अंबक
13. आम : आम्र, चूत, रसाल, सहकार, अमृतफल, अतिसौरभ
14. अद्‌भुत : अतुल, अनुपम, अनोखा, अपूर्व, न्यारा, निराला, विलक्षण
15. अन्वेषण : अनुसंधान, खोज, गवेषण, जाँच, छानबीन, शोध
16. अनी : सेना, फौज, दल, कटक, चमू, कुमक
17. इच्छा : वांछा, आकांक्षा, मनोरथ, अभिलाषा, चाह, कामना, ईप्सा, ईहा
18. इन्द्र : पुरन्दर, शक्र, वासव, सुरेश, देवराज, शचीपति, मघवा, महेन्द्र, सुरपति, देवेन्द्र
19. ईश्वर : ईश, जगदीश, परमेश्वर, परमात्मा, प्रभु, भगवान्, सच्चिदानंद
20. उद्यान : उपवन, वाटिका, बाग, बगीचा, बगिया, आराम
21. कपड़ा : वस्त्र, पट, वसन, अम्बर, चीर, अंशुक
22. कमल : पद्‌म, अरविन्द, नलिन, सरसिज, सरोज, राजीव, जलज, शतदल, पंकज, तामरस, अब्ज
23. किरण : मयूख, अंशु, रश्मि, मरीचि, कर, प्रभा, अर्चि
24. कुबेर : किन्नरेश, यक्षराज, धनद, धनाधिप, राजराज, धनाधीश, नरवाहन
25. कामदेव : अनंग, रतिपति, काम, मदन, मनोज, मन्मथ, अतनु, कंदर्प, पुष्पधन्वा
26. कृष्ण : माधव, मुरारि, वासुदेव, कन्हैया, श्याम, नंदनंदन, श्यामसुन्दर, गोपाल, कसारि, मुरलीधर
27. किनारा : तट, तीर, कूल, रोध, प्रतीर
28. कोयल : कोकिल, काकली, पिक, वनप्रिया
29. गदहा : खर, धूसर, गर्दभ, गधा, वैशाखनंदन, रासभ

30. गणेश : लंबोदर, विनायक, द्वैमातुर, गणाधिप, एकदन्त, गजानन, विघ्नराज, गणपति, हेरम्ब
31. गंगा : विष्णुपदी, जाह्नवी, भागीरथी, त्रिपथगा, सुरनदी, देवनदी, घ्रुवनन्दा
32. घर : गेह, सदन, निकेतन, भवन, निलय, आलय
33. चतुर : चालाक, विज्ञ, नागर, सयाना, होशियार, प्रवीण, निपुण, सुजान, कुशल
34. चन्द्रमा : चाँद, सुधाकर, निशाकर, विधु, हिमांशु, सुधांशु, शशि, राकेश, इन्दु, मयंक, मृगांक
35. चाँदनी : चन्द्रिका, ज्योत्सना, चन्द्रप्रभा, कौमुदी
36. चिड़िया : खग, विहग, पक्षी, पंछी, चटका, द्विज, शकुनि, शकुन्त, खेचर
37. चोर : स्तेन, तस्कर, दस्यु, खनक, साहसिक, रजनीचर
38. जल : नीर, तोय, सलिल, अंबु, पानी, जीवन, वारि, पय
39. झंड़ा : ध्वज, ध्वजा, परचम, पताका, केतन
40. तलाब : सर, सरोवर, तड़ाग, पुष्कर, पद्माकर, जलाशय
41. तरंग : लहर, लहरी, ऊर्मि, हिल्लोल
42. तलवार : असि, करवाल, कृपाण, खंग, खड्ग
43. दास : अनुचर, चाकर, नौकर, भृत्य, सेवक, परिचारक
44. दुःख : पीड़ा, व्यथा, कष्ट, संकट, शोक, क्लेश, वेदना, यंत्रणा
45. दिन : दिवस, वासर, तिथि, तारीख, वार, अहन्
46. दासी : नौकरानी, परिचारिका, सेविका, भृत्या
47. धनुष : कमान, कामुर्क, कोदंड़, चाप, धनु
48. नदी : सरिता, तटिनी, आपगा, निम्नगा, तरंगिणी, निर्झरिणी, कूलंकषा
49. नौका : नाव, तरिणी, जलयान, तरी, बेड़ा, जलपतंग, डोंगी
50. पंड़ित : सुधी, विद्वान्, कोविद, धीर, बुध
51. पुत्र : आत्मज, कुमार, बेटा, तनय, सुत, नंदन, पूत, लड़का
52. पुत्री : आत्मजा, कुमारी, बेटी, तनया, बेटी, तनुजा, दुहिता, लाडली
53. पत्नी : भार्या, दारा, कलत्र, वधू, जाया, प्रिया, वल्लभा, आर्धांगिनी, प्रियतमा, स्त्री
54. पत्थर : अश्म, पाषाण, प्रस्तर, उपल, शिला
55. पहाड़ : महीधर, पर्वत, गिरि, अचल, भूधर, शैल
56. पिता : तात, जनक, बाप, जन्मदाता, बापू, बाबूजी
57. पृथ्वी : भू, भूमि, धरा, वसुधा, वसुंधरा, धरती, मही
58. पेड़ : पादप, गाछ, तरु, तरुवर, वृक्ष, दरख्त
59. पुष्प : फूल, कुसुम, सुमन, प्रसून, पुहुप
60. बिजली : चंचला, चपला, दामिनी, विद्युत, सौदामनी, क्षणप्रभा
61. विष : गरल, काकोल, क्ष्वेड, हलाहल, दरिद, जहर
62. वेश्या : गणिका, कुलटा, अगम्या, रंडी
63. बादल : अभ्र, मेघ, वारिवाह, बलाहक, धाराधर, जलधर, वारिद, धन, जीमूत, जलद
64. वायु : हवा, समीर, समीरन, पवन, मारुत, वात
65. भौंरा : अलि, चंचरीक, भ्रमर, द्विरेक, मधुप, भृंग, मधुकर
66. मछली : मत्स्य, झख, मीन, सफरी, जलजीवन
67. माता : जननी, माँ, मातृ, अम्मा, मम्मी, अम्बा
68. मित्र : दोस्त, सखा, सुह्रद, सहचर, मीत, साथी
69. मुहँ : मुख, आस्य, वक्त्र, वदन आनन, तुण्ड
70. मेढ़क : भेक, मण्डूक, वर्षाभू, शालूर, दादुर
71. मोर : मयूर, मेहप्रिय, मेहानृत्तक महनर्तक, पक्षिराज
72. यमुना : कालिन्दी, सूर्यतनया, जमुना, शमनस्वसा

73. राजा	:	भूप, नृप, महीप, महीपति, नरेश, भूपति, राव, सम्राट्
74. रात	:	निशा, रजनी, रैन, शर्बरी, रात्रि, यामिनी, विभावरी, तमी
75. लक्ष्मी	:	चंचला, पद्मा, कमला, श्री, हरिप्रिया, रमा, भार्गवी
76. सोना	:	कंचन, स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हाटक, हिरण्य
77. साँप	:	भुजंग, सर्प, अहि, विषधर, ब्याल, चक्षुश्रवा, काकोदर, फणी
78. सरस्वती	:	भाषा, भारती, गिरा, वाक्, वाणी, शारदा, वीणापाणि, गी, ब्राह्मी
79. स्त्री	:	नारी, महिला, वनिता, ललना, कान्ता, अंगना, रमणी, कलत्र
80. सागर	:	समुद्र, समंदर, जलधि, रत्नाकर, उदधि, वारिधि, सिंधु पारावर
81. सिंह	:	हरि, केसरी, पशुराज, गजेन्द्र, शार्दूल, व्याध्र, महावीर, शेर
82. हाथी	:	गज, मतंग, नाग, दन्ती, कुंजर, हस्ती
83. हिरन	:	मृग, सारंग, कुरंग सुरभी

अनेकार्थी शब्द

1. अर्क	:	इन्द्र, सूर्य, रस, अकबन
2. अंक	:	संख्या, गोद, भाग्यरेखा
3. अंश	:	हिस्सा, कोण का अंश, किरण
4. अनन्त	:	आकाश, अन्तहीन, विष्णु
5. अज	:	ब्रह्मा, बकरा, दशरथ का पिता
6. अक्ष	:	आँख, धुरी, आत्मा, पहिया, पासा
7. अक्षर	:	अविनाशी, वर्ण, आत्मा, आकाश, मोक्ष
8. अलि	:	भौंरा, मदिरा, कुत्ता
9. अहि	:	सर्प, सूर्य, कष्ट
10. आत्मा	:	प्राण, अग्नि, सूर्य
11. अनल	:	आग, परमेश्वर, जीव, विष्णु
12. अभय	:	निर्भयता, शिव, निरापद
13. अतिथि	:	मेहमान, साधु, अग्नि, कुशपुत्र
14. काम	:	कार्य, इच्छा, कामदेव
15. खर	:	दुष्ट, गधा, तिनका, कड़ा, तीक्ष्ण, मोटा
16. खग	:	पक्षी, तारा, बाण, जुगनू
17. ख	:	स्वर्ग, आकाश, ब्रह्म, नगर, इन्द्रिय
18. गुरु	:	भारी, शिक्षक, श्रेष्ठ, बृहस्पति
19. गो	:	गाय, इन्द्रिय, स्वर्ग, भूमि
20. घट	:	घड़ा, देह, ह्रदय, किनारा
21. चंचला	:	लक्ष्मी, स्त्री, बिजली
22. जलज	:	कमल, मोती, मछली, शंख, सेवार, चाँद, जोंक
23. ताक्ष्र्य	:	घोड़ा, गरुड़, सर्प, स्वर्ण, रथ
24. तमचर	:	उल्लू, राक्षस, चोर
25. द्विज	:	पक्षी, दाँत, ब्राह्मण, गणेश
26. धनंजय	:	अर्जुन, नाग
27. नाग	:	हाथी, साँप, पर्वत, बादल
28. निशाचर	:	राक्षस, प्रेत, उल्लू, चोर, साँप
29. नाक	:	नासिका, स्वर्ग, मान

30. नागर	:	चतुर, नागरिक, सोंठ
31. पतंग	:	पक्षी, सूर्य, नाव, शरीर, फतिंगा
32. पुष्कर	:	तालाब, कमल, आकाश, तलवार
33. मद	:	घमंड़, हर्ष, शराब
34. यति	:	योगी, जितेन्द्रिय, ब्रह्मा–पुत्र, विराम
35. रश्मि	:	लक्ष्मी, किरण, लगाम
36. वाणी	:	सरस्वती, सार्थक शब्द, जीभ, सरकंड़ा
37. व्योग	:	आकाश, अभ्रक, कल्याण
38. शिखि	:	अग्नि, मयूर, पुरुष, मुर्गी
39. शिलीमुख	:	भ्रमर, बाण, मूर्ख
40. शून्य	:	आकाश, बिन्दु, अभाव, ईश्वर
41. सरंग	:	मृग, भ्रमर, कोयल, मयूर, स्त्री, नानावर्ण, सुन्दर, सरस, सिंह, हाथी, बादल, वृक्ष, छाता, वस्त्र, बाल, शंख, कपूर, चन्दन, आभूषण, स्वर्ण
42. हरि	:	विष्णु, साँप, बन्दर, सूर्य, इन्द्र, मेढ़क, कोयल, किरण, आग, गीदड़
43. हंस	:	सूर्य, आत्मा, एक पक्षी

विलोमार्थी शब्द

(क) **नया विलोमार्थी शब्द :–**

अतिवृष्टि	–	अनावृष्टि	उगना	–	डूबना
उच्च	–	नीच / निम्न	उत्तम	–	अधम
उदीची	–	अवाची	उपरि	–	निम्न
उदास	–	प्रफुल्ल / प्रसन्न	उर्वर	–	ऊसर
दाता	–	कंजूस	उद्धत	–	विनीत
उग्र	–	सौम्य	धृष्ट	–	विनयशील
उष्ण	–	शीत	उत्तर	–	दक्षिण / प्रश्न
सरल	–	कुटिल	भीतर	–	बाहर
अकेला	–	साथ	अंधकार	–	आलोक / प्रकाश
अथ्	–	इति	अमृत	–	विष
सुधा	–	गरल	अवश्य	–	संभवतः
अमावस्या	–	पूर्णिमा	अवनि	–	अंबर
अनुमोदन	–	विरोध	समर्थन	–	विरोध
अलग	–	साथ	अवाई	–	विदाई
आगमन	–	प्रस्थान	अल्प	–	अधिक / प्रचुर
आगे	–	पीछे	आग	–	पानी
आदि	–	अन्त	आरंभ	–	अन्त / अवसान
आध्यात्मिक	–	आधिभौतिक	ऋणी	–	उऋण
एकत्र	–	विकीर्ण	कटु	–	मधु
कर्कश	–	मृदुल	तिक्त	–	मधुर
कच्चा	–	पक्का	गौण	–	प्रधान
संग्रह	–	त्याग	ग्रामीण	–	नागरिक
ग्रस्त	–	मुक्त	ग्रास	–	मोक्ष
बंधन	–	मुक्ति	गाड़ना	–	उखाड़ना
घटना	–	बढ़ना	चतुर	–	मूर्ख

चिरंतन	–	तात्कालिक	चुस्त	–	ढीला
जंगल	–	गाँव	जीवन	–	मरण
निजी	–	सार्वजनिक	जंगम	–	स्थावर
आकुंचन	–	प्रसारण	आर्द्र	–	शुष्क
आलस्य	–	स्फूर्ति / उद्यम	आवाहन	–	विसर्जन
आसक्त	–	विरक्त	विषयी	–	जितेन्द्रिय
ईद	–	मुहर्रम	श्रम	–	विश्राम
कनिष्ठ	–	ज्येष्ठ	कुत्सा	–	प्रशंसा
निंदा	–	स्तुति	क्षीण	–	पुष्ट
क्षमा	–	दंड	स्याह	–	सफेद
कर्कशा	–	सुशीला	कुसुम	–	कंटक
फूल	–	काँटा	क्षुद्र	–	महान
क्षणिक	–	शाश्वत	ह्रास	–	वृद्धि
खल	–	सज्जन	खीझना	–	रीझना
गहरा	–	छिछला	जाग्रत	–	सुप्त
गुरु	–	लघु / शिष्य	गृहस्थ	–	संन्यासी
निद्रा	–	जागरण	निशीथ	–	मध्याह्न
निंद्य	–	वंद्य	स्वकीय	–	परकीय
पहला	–	दूसरा	प्रभु	–	भृत्य
प्रायः	–	बिरले	पूर्वाह्ण	–	अपराह्ण
प्रस्थान	–	आगमन	बचपन	–	बुढ़ापा
गुण	–	दोष	ज्योति	–	तम
जरा	–	यौवन	जीवित	–	मृत
ज्वार	–	भाटा	तिमिर	–	आलोक
तरल	–	ठोस	तरुण	–	वृद्ध
तीव्र	–	मन्द	तीक्ष्ण	–	कुंद
थोक	–	खुदरा	दंड़	–	पुरस्कार
दिन	–	रात	दूषित	–	स्वच्छ
द्रुत	–	विलम्बित	देव	–	दानव
देवता	–	राक्षस	ध्वंस	–	निर्माण
नख	–	शिख	रोगी	–	नीरोग
लौकिक	–	दिव्य / अलौकिक	लोभी	–	निर्लोभी / संतोषी
विधि	–	निषेध	विस्तार	–	संक्षेप
बसंत	–	पतझड़	शोषक	–	शोषित / पोषक
श्रीगणेश	–	इतिश्री	शिरोमणि	–	चरणधूलि
श्रव्य	–	दृश्य	सृष्टि	–	प्रलय
समाज	–	व्यक्ति	समष्टि	–	व्यष्टि
समास	–	व्यास	स्त्रैण	–	पुरुषोचित
बाह्य	–	आभ्यन्तर	भीरु	–	निर्भीक
मिट्टी	–	सोना	मंगल	–	विघ्न / अमंगल
संधि	–	विग्रह	स्थायी	–	नश्वर
सात्विक	–	तामसिक	हर्ष	–	विषाद
ह्रस्व	–	दीर्घ	सदाचारी	–	व्यभिचारी

सर्वदा	–	कभी–कभी	स्वादिष्ट	–	फीका
अभिमान	–	नम्रता	आकर्षण	–	विकर्षण
अविर्भाव	–	तिरोभाव	उदार	–	अनुदार
उपरिलिखित	–	निम्नलिखित	उर्वर	–	ऊसर
उष्ण	–	शीत	कृश	–	ह्रष्ट–पुष्ट
अनुराग	–	विराग	आगामी	–	गत
आग्रह	–	दुराग्रह	इहलोक	–	परलोक
उत्तर	–	अनुत्तर / प्रश्न	ऐच्छिक	–	अनिवार्य
कीर्ति	–	अपकीर्ति	अल्पायु	–	दीर्घायु
अपेक्षा	–	उपेक्षा	अनिवार्य	–	वैकल्पिक
आवाहन	–	विसर्जन	उद्‌यमी	–	आलसी
उग्र	–	शांत	ॠजु	–	कुटिल
ऐक्य	–	अनैक्य	कटु	–	मधु
कृपालु	–	क्रूर, निर्दयी	क्रिया	–	प्रतिक्रिया
खेद	–	प्रसन्नता	गमन	–	आगमन
चंचल	–	स्थिर	जल	–	निर्जल / थल
जंगली	–	पालतू	देव	–	दानव
नख	–	शिख	निरक्षर	–	साक्षर
परकीया	–	स्वकीया	प्रवृत्ति	–	निवृत्ति
बंधन	–	मोक्ष	भाव	–	अभाव
रूग्ण	–	स्वस्थ	वक्र	–	ॠजु
वृद्‌धि	–	क्षय	खरा	–	खोटा
गहरा	–	ऊथला	छल	–	निश्छल
दाता	–	याचक	पुरस्कार	–	दंड़
प्रभु	–	दास, सेवक	मितव्यय	–	अपव्यय
मिलन	–	बिछोह	मूक	–	वाचाल
विशुद्‌ध	–	दूषित	शिष्ट	–	अपशिष्ट
तरूण	–	वृद्धि	नूतन	–	पुरातन
पतिव्रता	–	कुलटा	हास्य	–	रूदन
पाश्चात्या	–	पौर्वात्य	बद्‌ध	–	मुक्त
मिथ्या	–	सत्य	मोक्ष	–	बंधन
योगी	–	भोगी	विकल्प	–	संकल्प
वादी	–	प्रतिवादी	शिव	–	अशिव
हर्ष	–	शोक	सूक्ष्य	–	स्थूल

(ख) दोनो में पूर्व खंड़ का परिवर्तन करके :–

उत्कर्ष	–	अपकर्ष	आकर्षण	–	विकर्षण
उन्मुख	–	अधोमुख	उपकार	–	अपकार
सुकर	–	दुष्कर	सुलभ	–	दुर्लभ
संपत्ति	–	विपत्ति	प्रबल	–	निर्बल

(ग) दोनो खंड़ो के अव्ययों में परिवर्तन करके :–

प्रख्यात	–	कुख्यात	सस्वर	–	अस्वर

(घ) अव्यय–भिन्न शब्दों को बदल करके:–

अल्पसंख्यक	–	बहुसंख्यक	अल्पज्ञ	–	बहुज्ञ
अधिकांश	–	अल्पांश	पूववर्त्ती	–	उत्तरावर्ती / परवर्त्ती

(ङ) प्रत्ययों में परिवर्तन करके :–

कृतज्ञ	–	कृतघ्न	पदारूढ़	–	पदच्युत
नमकहलाल	–	नमकहराम	हन्ता	–	हत

(च) एक में पूर्वखंड का दूसरे में उत्तराखंड़ का परिवर्तन :–

खंडनीय – अखंड़

(छ) मिश्रित परिवर्तन

शिकस्त	–	फतह	मितव्ययी	–	अपव्ययी
प्रच्छन्न	–	प्रकट			

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

- जो क्षमा न किया जा सके – **अक्षम्य**
- जहाँ पहुँचा न जा सके – **अगम्य**
- जिसे सबसे पहले गिनना उचित हो – **अग्रगण्य**
- जिसका जन्म पहले हुआ हो – **अग्रज**
- जिसका जन्म बाद/पीछे हुआ हो– **अनुज**
- जिसकी उपमा न हो – **अनुपम**
- जिसका मूल्य न हो – **अमूल्य**
- जिसके समान अन्य न हो– **अनन्य**
- जिसके समान दूसरा न हो– **अद्वितीय**
- जो न जानता हो– **अज्ञ**
- जो जातियों के बीच में हो– **अन्तर्जातीय**
- आशा में कहीं बढ़कर– **आशातीत**
- अधः (नीचे) लिखा हुआ – **अधोलिखित**
- जो क्षय न हो सके – **अक्षय**
- श्रद्धा से जल पीना – **आचमन**
- जो सोचा भी न गया हो – **अतर्कित**
- जिसका उल्लंघन करना उचित न हो – **अनुल्लंघनीय**
- अनुवाद किया हुआ – **अनूदित**
- जिसकी तुलना न हो – **अतुलनीय**
- जिसका आदि न हो – **अनादि**
- जिसका अन्त न हो – **अनन्त**
- जिस पर मुकदमा हो – **अभियुक्त**
- जिस पर विश्वास न हो – **अविश्वसनीय**
- अपनी ही हत्या करने वाला – **आत्मघाती**

- जो दूसरों का बुरा करे – **अपकारी**
- दूसरे के मन की बात जानने वाला – **अन्तर्यामी**
- दूसरे के अन्दर की गहराई ताड़न`वाला – **अन्तर्दर्शी**
- जिसे काटा न जा सके – **अकाट्य**
- नकल करने योग्य – **अनुकरणीय**
- साधारण नियम के विरुद्ध बात – **अपवाद**
- जो मनुष्य के लिए उचित न हो – **अमानुषिक**
- जो होने से पूर्व किसी बात का अनुमान करे – **अनागतविधाता**
- इन्द्र की पुरी – **अमरावती**
- कुबेर की नगरी – **अलकापुरी**
- दोपहर के बाद का समय – **अपराह्न**
- पर्वत के ऊपर की समभूमि – **अधित्यका**
- जो थोड़ा जानता हो – **अल्पज्ञ**
- जो ऋण ले – **अधमर्ण**
- जो साधा न जा सके – **असाध्य**
- मोहजनित प्रेम – **आसक्ति**
- किसी श्रेष्ठ का मान या स्वागत – **अभिनन्दन**
- जिसके आने की तिथि ज्ञात न हो – **अतिथि**
- जो स्त्री सूर्य भी न देख सके – **असूर्यम्पश्या**
- बिना वेतन के – **अवैतनिक**
- सिर से लेकर पैर तक – **आपादमस्तक**
- बालक से लेकर वृद्ध तक – **आबालवृद्ध**
- बिना प्रयास के – **अनायास**
- जिसकी आशा न की गई हो – **अप्रत्याशित**
- जिसे मापा न जा सके – **अपरिमेय**
- दक्षिण दिशा – **अवाची**
- उत्तर दिशा – **उदीची**
- पूरब दिशा – **प्राची**
- पश्चिम दिशा – **प्रतीची**
- जो व्याकरण द्वारा सिद्ध न हो – **अपभ्रंश**
- मर्यादा का उल्लंघन करके किया हुआ – **अतिकृत**
- जिसका ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा न हो – **अतिन्द्रिय**
- अध्ययन किया हुआ – **अधीत**
- जिसका दूसरा उपाय न हो – **अनन्योपाय**
- जिसका अनुभव किया गया हो – **अनुभूत**
- महल के भीतर का भाग – **अन्तःपुर**
- जिसका पति आया हुआ है – **आगत्पतिका**
- जिसका पति आनेवाला है – **आगमिष्यत्पतिका**
- चोट खाया हुआ – **आहत**
- ऐसी भूमि जो उपजाऊ नहीं हो – **ऊसर**

- भूमि को भेदकर निकलनेवाला –**उद्भिद्**
- तिनकों से बना घर – **उटज**
- जिसमें विष न हो – **निर्विष**
- जिसे कर्त्तव्य न सूझ रहा हो – **किं–कर्त्तव्यविमूढ़**
- लेख की नकल – **प्रतिलिपि**
- जानने को इच्छुक/इच्छावाला – **जिज्ञासु**
- जो देर तक स्मरण के योग्य हो – **चिरस्मरणीय**
- शासन हेतु नियमों का समूह – **संविधान**
- जो चाँदी–जैसा सफेद हो – **परुहला**
- दस वर्षों का समूह – **दशक**
- सौ वर्षों का समूह – **शताब्दी**
- व्याकरण जाननेवाला –**वैयाकरण**
- शक्ति का उपासक – **शाक्त**
- जो तत्व सदा रहे – **शाश्वत**
- जो हर काम देर से करे – **दीर्घसूत्री**
- हाथ की लिखी पुस्तक या मसौदा – **पांडुलिपि**
- गिरने से कुछ ही बची इमारत – **ध्वंसावशेष**
- वीर पुत्रों को जन्म देनेवाली – **वीरप्रसूता**
- गोद ली संतान – **दत्तक**
- साधारण लोगों में कही जानेवाली बात – **किंवदंती**
- जिसका नाश अवश्यंभावी हो – **नश्वर**
- जो पुराणों से संबंध रखता हो – **पौराणिक**
- जो वेदों से संबंध रखता हों – **वैदिक**
- जिसका जन्म पसीने से हो – **स्वेदज**
- शिव के धनुष – **पिनाक**
- मध्य रात्रि का समय – **निशीथ**
- मरने के करीब – **मुमूर्षु/मरणासन्न**
- पर्वत के नीचे की समभूमि (तराई) – **उपत्यका**
- जहाँ नाटक का अभिनय किया जाय – **रंगमंच**
- जो आकाश में विचरण करे – **खेचर**
- जो मोह नहीं करता है – **निर्मोही**
- जिस शब्द के दो अर्थ हों – **श्लिष्ट**
- जो तुरंत जन्मा है – **सद्यःजात**
- नींद पर विजय प्राप्त करनेवाला – **गुडाकेश**
- जो स्त्री के स्वभाव का हो – **स्त्रैण**
- जो वचन से परे हो – **वचनातीत**
- लौटकर आया हुआ – **प्रत्यागत**
- जो पूछने योग्य हो – **प्रष्टव्य**
- जंगल की आग – **दावानल**
- पेट या जठर की आग – **जठरानल**

- समुद्र की आग – **वडवानाल**
- रात और संध्या के बीच की बेला – **मोधूलि**
- जिसका तेज निकल गया है – **निस्तेज**
- जीतने की इच्छा – **जिगीषा**
- लाभ की इच्छा/पाने की इच्छा – **लिप्सा**
- खाने की इच्छा – **बुभुक्षा**
- जीने की इच्छा – **जिजीविषा**
- मेघ की तरह गरजनेवाला – **मेघनाद**
- विष्णु की तलवार – **नन्दक**
- सिर पर धारण करने योग्य – **शिरोधार्य**
- जिसका दमन करना कठिन हो – **दुर्दम्य**
- जिसको लाँघना कठिन हो – **दुर्लंघ्य**
- जो सहज रूप से न पचे (देर से पचने वाला) – **गुरुपाक**
- जो अपने से उत्पन्न हुआ हो – **स्वयंभू**
- जो शत्रु की हत्या करे – **शत्रुघ्न**
- जिसकी पत्नी साथ नहीं हो – **वित्नीक**
- जिसके दोनों ओर जल है – **दोआव**
- आमावस्या की रात – **कुहू**
- कलम की कमाई खानेवाला – **मसिजीवी**
- जिस नारी की बोली कठोर हो – **कर्कशा**
- जो विश्वभर की भरण–पोषण करे – **विश्वंभर**
- जिसकी इच्छा न की जाती हों – **अनभिलषित**

मुहावरे और उनके अर्थ

- अंक भरना = लिपटा लेना
- अंगार बरसना = चिलचिलाती धूप होना
- अँगुठा चूसना = खूशामद करना
- आँचल पसारना = माँगना
- अंडा सेना = बेकार रहना/किसी वस्तु का बहुत ख्याला करना
- अँधेर नगरी = अत्यन्त अन्याय
- अक्ल का अजीर्ण होना = मूर्ख होना
- अगर–मगर करना = टाल–मटोल करना
- अडंगा लगाना/डालना = बाधा डालना
- अन्न–जल उठना = मृत्यु के करीब होना
- अपना किया पाना = कर्म का फल भोगना
- अपनी नींद सोना = निश्ंिचत रहना
- अहीर होना = मुर्ख होना
- आँख का अंधा गाँठ का पूरा = धनी पर मूर्ख/मूर्ख धनवान
- आँख की पुतली होना = अत्यधिक प्यारा होना
- आँख चरने जाना = सामने की वस्तु न दिखना

- आँख चुरा कर जाना = चुपके से निकल जाना
- आँखें तरसना = देखने की बेताबी
- आँखें प्यासी होना = देखने की प्रबल इच्छा
- आँखों का अंधा = बेवकूफ
- आँखों का काँटा होना = दुश्मन होना
- आँखो–ही–आँखों में = संकेत से
- आँटी गरम करना = घूस देना
- आँसू पोंछना = हिम्मत बँधाना
- आईना होना = बिल्कुल स्वच्छ होना
- आग के मोल होना = बड़ महँगा होना
- आग बरसना = लू चलना
- आटा गीला करना =बैठे–बैठे खाना
- आटे–दाल का भाव मालूम होना = व्यावहारिक ज्ञान होना
- आन पर आना = प्रतिष्ठा का प्रश्न
- आपस में गाँठ पड़ना = मन–मुटाव होना
- आसमान टूट पड़ना = अचानक आफत आना
- आसमान से गिरना = धोखा खाना
- इन्द्र की परी होना = बहुत सुन्दरी
- इति होना = खत्म होना
- ईंट तक बिकवाना = दरिद्र बना देना
- उल्लू का पट्ठा होना = मूर्ख होना
- एक की दस सुनाना = कड़ा उत्तर देना
- एक–दो–तीन होना = नीलाम होना
- एक ही भाव तौलना = सबके साथ एक–सा बर्ताव करना
- एड़ी से चोटी तक आग लगना = अत्यंत क्रुद्ध होना
- ऐंठ लेना = धोखे से लेना
- ऐसी–तैसी करना = इज्जत खराब करना
- ऐसा–वैसा न होना = असाधारण
- ओछे की प्रीति = नीचों की मित्रता
- औंधे मुँह गिरना = बुरी तरह धोखा खाना
- और ही रंग खिलना = कुछ विचित्र बात होना
- कंघी–चोटी में रहना = हमेशा बनाव–श्रृंगार में रहना
- कंचन बरसना = बहुत धन पाना
- कंठ फूटना = थोड़ा बढ़कर बोलना
- कंधा देना = मदद देना
- कतरब्योंत करना = किफायत करना
- कफन की कौड़ी न होना = अत्यंत निर्धन होना
- कलेजा धक–से हो जाना = स्तब्ध रह जाना
- कलेजा निकालकर रख देना = दिल की बात कहना
- कलेजा पकना = दुःखी होना

- कलेजा पत्थर का होना = पत्थर दिल होना
- कलेजा फटना = दुःखी होना
- कलेजा हाथभर का होना = हिम्मती होना/खुश होना
- कलेजे पर हाथ रखना = ठंडे दिल से सोचना
- कहने में आना = बहकावे में पड़ना
- काँटा बोना/बिछाना = अनिष्ट करना
- कागज की नाव = अस्थायी
- कागजी घाड़े दौड़ाना = व्यर्थ की लिखा पढ़ी
- काटने दौड़ना = क्रुद्ध रहना
- काटो तो खून नहीं = कुछ अप्रत्याशित बात सुनकर स्तब्ध रह जाना
- काठ की हाँडी = अस्थायी
- कान देना = ध्यान देना
- कान पकड़ना = शपथ लेना
- काम आना = वीरगति प्राप्त होना
- काया पलटना = आमूल परिवर्तन
- कुएँ में भंग पड़ना = सभी एक ही तरह के
- कुत्ता काटना = दुर्बुद्धि होना
- कौल का पूरा = वचन का पक्का
- खपा देना = मर मिटना
- खलबली मचना = भगदड़ मचना
- खाक उड़ना = बर्बाद होना
- खाल उधेड़ना = बहुत पिटाई करना
- खुदा की मार = दैवी प्रकोप
- खूँटे के बल कूदना = दूसरे के भरोसे उछलना
- खून सफेद होना = कृतघ्न होना
- खेत आना = मरना
- गंगा नहा लेना = किसी महत्वपूर्ण काम से मुक्ति
- गंगा लाभ होना = मृत्यु होना
- गजभर की छाती होना = बहुत छाती होना
- गताल खाते जाना = डूबना
- गर्दन पर सवार होना = हमेशा पीछे लगा रहना
- गहरा हाथ मारना = बहुत धन पाना
- गहरा छनना/गाढी छनना = बहुत दोस्ती
- गुरुघंटाल होना = चालबाज होना
- गुल खिलना = अनहोनी होना
- गोटी लाल होना = फायदा होना
- गोली मारना = छोड़ना
- घर बैठे शिकार खेलना = बिना मेहनत किए माल बनाना
- घर से देना = हानि उठाना
- घात में रहना = मौके की तलाश में

- घास काटना = व्यर्थ में समय गुजारना
- घी के दीये जलाना = आनन्द मनाना
- घुल–घुलकर काँटा होना = चिंता के कारण दुर्बल होना
- घोलकर पिला देना = कंठस्थ करा देना
- चक्की में जुते रहना = काम करते रहना
- चलता–पुर्जा होना = चालाक होना
- चाँदी काटना = आराम करना/खूब कमाई होना
- चाँदी का जूता मारना = रिश्वत देना
- चीटीं के पर निकलना = मौत के लक्षण दिखना
- चिड़िया फँसना = किसी मालदार को फँसाना
- चिराग गुल होना = वंश का नाश होना
- चिराग तले अँधेरा होना = ऊपर से स्वच्छ भीतर नहीं
- चिल्ल पों मचाना = हल्ला करना
- चैन की वंशी बजाना = आराम की जिन्दगी जीना
- चौकड़ी भूल जाना = कोई उपाय न सूझना
- छक्का–पंजा भूलना = बुद्धि का मारा जाना
- छप्पर पर फूस न होना = बहुत गरीब
- छाती पर साँप लोटना = जलना
- जयचन्द होना = गद्दार होना
- जलकर खाक हो जाना = बहुत गुस्सा होना
- जलती आग बुझाना = झगड़ा शांत करना
- जान आना = साहस होना
- जान का ग्राहक होना = पीछे पड़ना
- जान का जंजाल होना = आफत होना
- जान के लाले पड़ना = जान पर आ जाना
- जान को जान न समझना = जान की परवाह न करना
- जान से हाथ धोना = मरना
- जी खपाना = जान लगाना
- जी छोटा करना = हतोत्साहित होना
- जीती मक्खी निगलना = जान–बूझकर पाप करना
- जीते जी मरना = जीवन में मृत्यु से अधिक निराशा
- जीवन भारी होना = जीवन से निराश होना
- जी बैठ जाना = हतोत्साहित होना
- जौ–जौ हिसाब लेना = कौड़ी–कौड़ी का हिसाब
- ज्वर उतरना = डाँट–डपटकर शांत करना
- झंडा गाड़ना = अधिकार में करना
- झोली भरना = भिक्षा देना
- टेक निभाना = जिद्द पूरी करना
- टोटा होना = अभाव होना
- टोपी उछालना = अपमानित करना

- टोह मिलना = पता चलना
- टोट में रहना = अवसर खोजना
- ठंडा होना = मंदा होना
- ठग विद्या होना = छल–कपट
- ठोड़ी पर हाथ धरकर बैठना = कुछ सोचना
- डंका पीटना = खुल्लम–खुल्ला
- डकार जाना = हजम कर जाना
- ढलती छाँह = अस्थायी/ढलती अवस्था
- ढाक के तीन पात = हमेशा एक सा
- तख्त का तख्ता होना = राज की बर्बादी
- तबला ठनकना = नाच–गान होना
- तबीयत आना = मन मचलना / प्रेम होना
- तवे की बूँद होना = प्रभावहीन होना
- ताव आना = जोश आना
- तिनके की ओट में पहाड छिपाना = इधर–उधर में बड़ी बात छिपाना
- तीन–तेरह करना = नष्ट–भ्रष्ट करना
- तीनों लोक दिखाई देना = अंधकार छा जाना
- तेल निकालना = दुर्दशा करना
- तैश में आना = गुस्से में आना
- त्रिशुकु होना = कहीं का नहीं
- थाली का बैंगन होना = अविश्वासी होना
- दम अटकना = किसी के लिए बैचेन प्रतीक्षा
- दिमाग आसमान पर चढ़ना = बहुत घमंड़ी
- दिल बैठ जाना = घबराना
- दीन–दुनिया की खबर ना होना = अज्ञानी होना
- दूज का चाँद होना = कम दिखाई देना
- दूर से ही सलाम करना = घृणा करना
- धुनी रमाना = निठल्ले बैठना
- धूल चाटना = गिड़गिड़ाना/गिरना
- धूल छानना = मारा–मारा फिरना
- धूल फाँकना = भूखा रहना
- धोती ढीली होना = डर जाना
- नंगा होना = ओछे विचार का
- नक्शा बिगड़ना = रंग–रूप खत्म होना
- नाक का बाल होना = बहुत प्यारा होना
- नानी मरना = होश ठिकाने न रहना
- नाव सूखे में चलना = असंभव को संभव करना
- नित खोदना नित पीना = रोज कमाकर खाना
- नूर बरसना = खूबसूरत होना
- पगड़ी रखना = मान रखना

- पत्थर पर दूब जमना = असंभव बात होना
- पत्थर पसीजना = कठोर को भी दया आना
- पसीने की जगह खून बहाना = मरने को तैयार रहना
- पसीने–पसीने होना = शर्मिंदा होना
- पाँव उखड़ना = हारना
- पाजामे से बाहर होना = गुस्सा करना
- पुराना घाघ = बहुत चालाक
- पेट काटना = खर्च में कटौती
- पेट पर पट्टी बाँधना = भूखा रहना
- पौ बारह होना = जीतना
- फंदे में पड़ना = धोखे में आना
- फटे हाल होना = गरीब होना
- फाँका करना = भूखे रहना
- फौलाद का होना = बहुत मजबूत होना
- बगुला भगत होना = ढोंगी होना/धोखेबाज
- बगलें झाँकना = जवाब न देना
- बहती गंगा में हाथ धोना = जहाँ सभी फायदे उठा रहे हैं, वहाँ फायदा उठाना
- बाँसों उछलना = खूब खुश होना
- बाँछें खिलना = खुश होना
- बालू की भीत होना = क्षणभंगुर होना
- बावन तोले पाव रत्ती = बिल्कुल ठीक
- बे वक्त की शहनाई बजाना = बिना अवसर बात कहना
- बोलवाला होना = चलती होना
- ब्रह्मा का अक्षर होना = अटल होना
- भाग खड़ा होना = हार मानना
- भाड़ झोंकना = व्यर्थ समय बर्बाद करना
- भोर होना = तबाह होना
- मन अटकना = प्रतीक्षा होना
- मन कच्चा करना = साहस नहीं होना
- मन का मैला होना = कपटी होना
- मन की गाँठ खोलना = जी खोल कर बात करना
- मन की मन में रहना = इच्छा पूरी न होना
- मन ड़ोलना = लालच होना
- मन भारी होना = दुःखी होना
- माल काटना = खूब कमाना
- मांस नोचना = परेशाान करना
- मिट्टी खराब करना = बर्बाद/दुर्दशा करना
- मीन मेख निकालना = दोष निकालना
- मुँह काला करना = उदास होना
- मुँहतोड़ जवाब देना = निरूत्तर कर देना

- मुँह देखकर बात करना = आदमी के अनुसार बर्ताव
- मुँह देखते रह जाना = चकित रह जाना
- मुँह न देखना = घृणा करना
- मुँह पर थूकना = शर्मिंदा करना
- मेंहदी लगाना = बिना काम के बैठे रहना
- मेढ़क का जुकाम होना = अयोग्य होने पर भी किसी चीज की अपेक्षा
- मोटाई चढ़ना = घमंड होना
- रंग आना = रौनक बढ़ना/मजा आना
- रंग उड़ना = डर जाना
- रंग जमाना = धाक जमाना
- रंग दिखाना = झंझट खड़ी करना
- राग रंग में रहना = विलासी जीवन जीना
- लंकाकाण्ड होना = भीषण आग लगना
- लँगोटी बिकवाना = बर्बाद करना
- लंबी तानना = निश्चित होकर सोना
- लकड़ी होना = सूख जाना
- लड़कों का खेल = सरल काम
- लहू सूखना = भयभीत होना
- लिफाफा खुलना = रहस्य खुलना
- लीप–पोत कर बराबर करना = नष्ट करना
- शंख बजना = काम होना
- शिकार हाथ लगना = पैसेवाले को वश में करना
- शेर के कान कतरना = बहादुरी के काम
- षोडश शृंगार करना = पूरी तरह सजना –धजना
- संकल्प विकल्प में पड़ना = दुविधा में पड़ना
- संसारी होना = गृहस्थ होना
- साँप छुछुन्दर की दशा होना = दुविधा में पड़ना
- साँप सूँघना = निष्क्रिय होना
- साँस तक न लेना = बिल्कुल चुपचाप
- सिर गंजा करना = बहुत मारना
- सिर पर हाथ रखना = सहायता करना
- सींग निकलना = बदमाश होना
- सूरज को दीया दिखाना = प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना
- सूरज ढलना = अवनति होना
- सूरत नजर न आना = कोई उपाय न सूझना
- सेर को सवा सेर मिलना = जो जैसा है उसे उससे बढ़कर मिलना
- सोने की कटारी होना = सुन्दर पर हानिकारक
- सोने में सुहागा = किसी सुन्दर वस्तु का और निखरना
- हजामत बनाना = मूर्ख बनाना
- हवाइयाँ छूटना = चेहरा फक्क हो जाना

- हवा पलटना = परिवर्तन होना
- हाथ उठाकर देना = खुशी से देना
- हाथ जोड़ना = संबंध न रखना
- हाथ के तोते उड़ना = बहुत घबड़ा जाना
- हाय–हाय करना = संतोष न होना
- हेकड़ी दिखाना = रोब दिखना

कहावतें

- अढ़ाई हाथ की ककड़ी, नौ हाथ का बीज = बच्चा शरारत में माता–पिता से भी बढ़ गया।
- अतिशय भक्ति, चोर के लक्षण = ढोंगी आदमी चापलूस हुआ करता है।
- अधजल गगरी छलकत जाय = अज्ञानी ही बढ–चढकर ज्ञान की बातें करता है।
- अंडा सिखाए बच्चे को कि चीं–चीं मत कर = छोटे का बड़े को नसीहत देना ।
- अंधी पीसे, कुत्ता खाय = कमाए कोई, उड़ाए कोई और
- अंधों के आगे रोना, अपना दीदा खोना = नासमझ को समझाने का व्यर्थ प्रयास
- अंधे के हाथ बटेर लगी = अपात्र को कोई बहुमूल्य चीज मिल जाना ।
- अशर्फियों की लूट कोयले पर छाप = अधिक नुकसान की चिन्ता–न कर कम नुकसान पर दुखी होना ।
- आँसुओं से प्यास नहीं बुझती = राने से दिल का अरमान पूरा नहीं होता ।
- आंए थे हरिभजन को, ओटन लगे कपास = करना था क्या और करने लगे क्या
- ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया = भाग्य की विचित्रता
- उल्टे बाँस पहाड़ चढाना/उल्टे बाँस बरेली को = उल्टा काम करना
- ऊधो का लेना न माधो का देना = बिल्कुल निश्चित
- ओछे की प्रीत बालू की भीत = छोटे दिलवाले की दोस्ती रेत की दीवार की तरह कमजोर होती है।
- कभी नाव पर गाड़ी, कभी गाड़ी पर नाव = समय किसी का एक–सा नहीं रहता
- काबुल में क्या गधे नहीं होते = अच्छे–बुरे सभी जगह होते हैं।
- कोयलों की दलाली में मुँह काला = बुरे काम में पड़ने का नतीजा बदनामी
- खग जाने खग ही की भाषा = जो जिसके साथ रहता हैं, वह उसके विचारों से परिचित रहता है।
- खरी मजूरी चोखा काम = मजदूरी अच्छी तो काम भी अच्छा।
- खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे = गुस्सेवाला व्यक्ति दूसरों पर अपना गुस्सा निकालता है।
- खेत खाय गदहा, मार खाय जोलहा = अपराध किसी का दंड किसी को
- गुड़ खाए, गुलगुले से परहेज = दिखावटी परहेज
- गुरु गुड़, चेला चीनी = चेले की योग्यता गुरु से बढ़ जाना
- चट मँगनी पट ब्याह = किसी काम का जल्दी संपन्न होना ।
- चोर का भाई जेबकतरा = ऐसा दुराचारी व्यक्ति जो किसी दोषी का पक्ष ले और उसे निर्दोष बताएं।
- चोर की दाढ़ी मे तिनका = अपराधी हमेंशा सशंकित रहता है।
- छछून्दर के सिर पर चमेली का तेल = कुपात्र को उत्तम वस्तु मिलना
- पेड़ न बगान तहाँ रेड़ परधान = मूर्खों के बीच थोड़ पढ़ा–लिखा आदर पाता है।
- जल्दी काम शैतान का = जल्दबाजी में काम बिगड़ जाता है।
- जान है तो जहान है = प्राणरक्षा प्रथम कर्त्तव्य है।
- जिसका खाए उसका गाए = उपकारी के प्रति कृतज्ञ होना।
- जिसे पिया चाहे वही सुहागन = जिसको मालिक चाहे वह बुरा भी अच्छा

- जो जागे सो पावे, जो सोवे सो खोवे = होशियार ही फायदा लेता है।
- ढ़ाक के तीन पात = परिणाम कुछ भी नहीं
- ढोल के अन्दर पोल = दिखावा कुछ और गुण कुछ नहीं
- थोथा चना बाजे घना = मूर्ख व्यक्ति शेखी बघारता है।
- दाना न घास, घोड़े तेरी आस = देना न लेना, मुफ्त में काम लेने के इरादे।
- धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का = कहीं ठौर ठिकाना नहीं।
- नाई की बारात में सभी ठाकुर–ही–ठाकुर = सभी खानेवाले ही काम करनेवाला कोई नहीं।
- नाम मेंरा गाँव तेरा = कोई कमाए, कोई खाए
- मन चंगा तो कठौती में गंगा = ह्रदय पवित्र रहने पर घर ही मंदिर
- आँख का अंधा, नाम नयनसुख = गुण के प्रतिकूल प्रसिद्धि
- अधजल गगरी छलकत जाय = ओछे व्यक्ति में ऐंठन होती है।